मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

सिर्फ़ एक ही राह-ए-नजात

आज सबकुछ छोड़ कर तुमसे एक यही आख़िरी बात कहना चाहता हूं, और यक़ीन करो कि उसके सिवा जो कुछ कहा जाता है, अगर वो इस बात के लिये नहीं कहा जाता तो सबकुछ बेकार है और इसमें तुम्हारे लिये कोई बरकत व अमन नहीं। सो याद रखो और मानने के लिये झुक जाओ कि तुम्हारी ज़िन्दगी का हर अमल बेकार है और तुम्हारी फ़िक्रों की हर फ़िक्र गुमराही व ज़लालत है। तुम्हारे लिये केवल एक ही राहे नजात है और बग़ैर उसके किसी तरह छुटकारा नहीं, तुम जब तक इस पहली मंज़िल से न गुज़रोगे, अमल के सफ़र का पहला क़दम ये है कि तौबा करो। अपनी तमाम क़ूवतों और तमाम ताक़तों के साथ ख़ुदा के आगे झुक जाओ, उसके आगे इस तरह गिरो और इस तरह रोओ और इस क़दर तड़पो, कि उसे तुमपर प्यार आ जाए और वो तुम्हे पहले की तरह अपनी गोद में उठा ले, फिर सबकुछ तुम्ही को देदे, जिस तरह कि सबकुछ तुम्हे बख़्श दिया था। तुमने ग़फ़लत को ख़ूब आज़मा लिया, तुमने नाफ़रमानियों की सदियों तक कड़वाहट चख ली, तुमने गुनाह और मासियत के फ़ल से अच्छी तरह अपने दामन भर लिये। तुमने देख लिया कि एक ख़ुदा की चौखट से तुमने सरकशी की और किस तरह सारी दुनिया तुमसे सरकश गयी। एक उसके रूठने से किस तरह सारी दुनिया तुमसे रूठ गयी। अब मान जाओ और अब भी बाज़ आ जाओ, गुनाहों को आज़मा चुको।

आओ तक़वा और रास्त बाज़ी को भी आज़मा लें, सरकशियों को चख चुकें, आओ! ताअत का भी मज़ा देखें। ग़ैरो से रिश्ता जोड़कर अनुभव कर चुके आओ किसी एक से फ़िर क्यों न जुड़ जांए। जिससे कट कर ज़िल्लतों और ख़्वारियों और ठोकरों के सिवा कुछ भी न हाथ आया।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

MAY 12 ₹10/-

copyright © 2007 Bill Frymire

कुरैश के काफ़िरों

का नबी-ए-करीम स०अ० से पक्षपात

तफ़सीरे मज़हरी में सअदी से नक़ल किया है कि एक बार कुरैश के काफ़िरों से दो सरदार अख़्नस बिन शुरैक़ और अबूजहल की मुलाक़ात हुई, तो अख़्नस ने अबूजहल से पूछा कि ऐ अबुल हकम (अरब में अबूजहल को अबुल हकम के नाम से पुकारा जाता था इस्लाम में उसके कुफ़्र व पक्षपात के कारण अबूजहल का लक़ब दिया गया) ये तन्हाई का मौक़ा है मेरी तुम्हारी बात को कोई तीसरा नहीं सुन रहा है, मुझे मुहब्बद बिन अब्दुल्लाह स०अ० के संबंध से अपना ख़्याल सही सही बताओ उनको सच्चा समझते हो या झूठा।

अबू जहल ने अल्लाह की क़सम खा कर कहा कि बिलाशुब्हा मुहम्मद स०अ० सच्चे हैं, उन्होने उम्र भर कभी झूठ नहीं बोला, लेकिन बात ये है कि कुरैश क़बीले की एक शाख बनू कुसई में सारे विशे ातांए और खूबियां जमा हो जाएंगी, बाक़ी कुरैश ख़ाली रह जांएगे। इसको हम कैसे बर्दाश्त करें?झन्डा बनू कुसई के हाथ में है, हरम में हज्जाज को पानी पिलाने की ख़िदमत उनके हाथ में है, बैतुल्लाह की दरबानी और उसकी कुन्जी उनके हाथ में है, अब अगर नबूवत भी हम उनके हाथ में तस्लीम कर लें तो बाक़ी कुरैश के पास क्या रह जाएगा।

एक दूसरी रिवायत नाजिया इब्ने कअब से मनक़ूल है कि अबूजहल ने एक बार खुद रसूलुल्लाह स०अ० से कहा कि हमें आप पर झूठ का कोई गुमान नहीं और न ही हम आपको झुठलाते हैं, हां हम इस किताब या दीन की तकज़ीब करते हैं जिसको आप स०अ० लाये हैं।

तफ़सीर–ए–मज़हरी

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: ५ | मई २०१२ ई० | वर्ष: ४

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

महमूद हसन हसनी नदवी

मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रति अंक–10रू वार्षिक–100रू०

सम्मानीय सदस्यता–500रू० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org

FAX-0535-2211386

E-Mail: markazulimam@gmail.com

इस अंक में:

मुसलमान की शान.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सहाबियात रज़ि० की दीनी ख़िदमते ३
मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

हमारा किरदार ग़ैर मुस्लिनमों में.....५
हज़रत मौलना राबे हसनी नदवी

ज़िन्दगी व इन्सानी समाज के निमार्ण में दिल का किरदार.....६
मौलाना डाक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

मांगने वाला भिखारी है चाहे भीख मांगे या जहेज़.....८
मौलाना शमशुलहक़ नदवी

जहन्नम क्या है.....१०
मौलाना इलियास नदवी

निकाह और तलाक़ की नाजाएज़ रस्में और ग़लत तरीक़े....११
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्लाम की पांच बुनियादें.....१४
जनाब हैदर अली नदवी

जहेज़ की तबाहकारी.....१६
जनाब शीराज़ुद्दीन साहब

आपके दीनी सवालात और उनके जवाबात.....१८

मानवाधिकार का इस्लामिक दृष्टिकोण.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

मुसलमान की शान

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

दीन अस्ल में एक मक़सद के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने का नाम होता है। इस वक़्त दुनिया मे तरह–तरह के धर्म व मज़हब पाये जाते हैं। एक वर्ग वो भी है जो अपने को हर मज़हब से अलग करता है। कम्यूनिज़्म की बुनियाद भी धर्मनिरपेक्षता पर पड़ी थी, उनके हिसाब से जो दुनिया मे आता है वो खा पीकर मज़े उड़ाकर चला जाता है, उसके आगे पीछे कोई नही लेकिन उन्होने भी कैप्टलिज़्म (Capitalism) के विरोध मे जो बिल्कुल दूसरी हद पर था उसके बिल्कुल ख़िलाफ़ एक नज़रिया पेश किया, चूंकि वो भी संतुलन न रख सके और मानवीय मूल्यों के विरुद्ध उन्होने बग़ावत की, इसलिए वो अपने उस मक़सद मे कामयाब न हो सके। जो धर्म किसी भी दर्जे मे मौजूद हैं उनका भविष्य उनके मानने वालों के विचारों पर टिका हुआ है उनकी मान्यता उन धर्मों के मानने वालों के नज़दीक एक तस्वीर या ख़्याल से ज़्यादा नहीं है इसलिए वो ख़ास–ख़ास मौक़े पर उसको याद कर लिया करते हैं। उनकी ज़िन्दगी में उसकी कोई छाप नज़र नही आती। बस कुछ ज़ाहिरी शक्लें हैं जिसको उनके यहां काफ़ी समझा जाता है, जो मज़हब आसमानी कहलाते हैं उनका हाल भी ये है कि वो सही दिशा से हट चुके हैं, उनमे और दूसरे मज़हबों मे कोई बड़ा फ़र्क़ नज़र नही आता, आख़िरत और बदला व सज़ा की हैसियत एक ख़्याल या विचार से ज़्यादा नही है, इसका नतीजा ये है कि उनकी ज़िन्दगी का उद्देश्य सिर्फ़ ये दुनिया रह जाती है। ख़ुदा, रसूल और आख़िरत की बात होती भी है तो सिर्फ़ इसलिए कि उसके ज़रिये से एक एकता क़ायम रखी जा सके, कुछ रस्में और त्योहार मना लिये जाते हैं और तो वो भी सही दिशा से हटे हुए होते हैं। सिर्फ़ और सिर्फ़ इस्लाम की विशेषता है कि उसने ज़िन्दगी के एक एक लम्हे को क़ीमती बनाने के उसूल पेश किये हैं, और एक एक सांस को अल्लाह की याद से जोड़ा है। इस्लामी नज़रिये से इन्सान का कोई लम्हा भी बेमक़सद नही है। अब ये ज़िम्मेदारी इन्सान की है कि वो अपनी ज़िन्दगी को और उसके एक–एक लम्हे को कितना बामक़सद बनाता है?

इस्लाम दीन और दुनिया मे कोई भेद–भाव नही करता, उसके नज़दीक ये दुनिया और उसकी सारी ज़रूरियात और आवश्यकतांए दीन ही का एक हिस्सा हैं यही वजह है कि वो हर चीज़ के रुख़ को सही करता है, और उसकी दिशा को सही करके उसको हक़ीक़ी मक़सद देता है। इस्लाम ग़फ़लत को पसन्द नही करता है, इसका मतलब ये है कि पूरी ज़िन्दगी सही दिशा पर पड़ जाए और उसका कोई लम्हा बेकार न हो। मक़सद हमेशा याद रहे। इस्लामी रूप अपना लेने और ज़ाहिरी इबादात कर लेने के बाद मुसलमान आज़ाद नही होता, बल्कि इससे ये मांग है कि वो अपनी ज़रूरतों को भी पूरा करे, दूसरों के हक़ को भी पूरा करे, और अपने वक़्त को बेकार न गुज़ारे, बेहतर से बेहतर को अपनाने की कोशिश करे और और किसी भी लम्हे मे मायूस न हो, इस्लाम इसकी हरगिज़ तालीम नही देता कि अगर किसी को मालूम हो जाए कि कुछ ही वक़्त के बाद उसकी मौत होने वाली है, तो वो सब कुछ छोड़ दे। उसकी तालीम तो ये है कि अगर कोई पेड़ लगा रहा है और मौत आने वाली हो तो उसके इन्तिज़ार मे अपना काम न रोके बल्कि वो मशग़ूल रहे, और अपने लम्हों को क़ीमती और किसी काम का बनाए, हां इतना ज़रूर है कि वास्तविक उद्देश्य उसके सामने रहे कि वो जो कुछ भी कर रहा है, वो अल्लाह को राज़ी करने और आख़िरत को संवारने के लिए कर रहा है। उसके इस अमल से अल्लाह के बन्दो को नफ़ा पहुंचेगा और ये चीज़ उसके लिए सदक़ा–ए–जारिया होगी। जो भी जितना दूसरों के लिए लाभकारी और हर एक के लिए बेहतरीन बन जाए तो उसके लिए सरापा ख़ैर है। हदीस मे आता है, (लोगों में सबसे बेहतर जो दूसरों को फ़ाएदा पहुंचाए। मुसलमान की शान ये है कि वो हर लम्हा कोशिश करे कि किस तरह वो एक–एक लम्हे को वसूल कर ले, यही वजह है कि वो बेकार के और फ़ज़ूल के कामों मे अपना वक़्त बर्बाद नही करता, उसका वक़्त बेकार नही जाता) इरशाद नबवी है, (ये इस्लाम की ख़ूबी और उसके महासिन मे से है कि उसके मानने वाले बेकार कामों के क़रीब नही जाते)

(शेष पेज 15 पर)

सहाबियात रज़ि0 की दीनी ख़िदमतें

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0

इस्लामी इतिहास इसका गवाह है कि पिछली सदियों में बेशुमार इस्लामी औरतों ने ज़िन्दगी के हर हिस्से में न भुलाने लायक़ काम अन्जाम दिये हैं। वो हिस्सा चाहे राजनीति का हो या व्यवहार व समाज का, ज्ञान का, ज़हद व रियाज़त का हो, या तक़वा व पाकी का, अक़्ल या ज़हानत का हो, देश की सेवा का हो या रियासत व बादशाहत का, हक़ अदा करने का हो या औलाद के प्रशिक्षण का हो, उन सारे हिस्सों में मुसलमान औरतों का फ़ज़्ल व कमाल और उनकी अपनाने योग्य मिसालें मिलेंगी।

इस्लामी औरतें उपरोक्त विशेषताओं व कमालों में अपने पेशतर व बरकतवाले और पाकीज़ा सिफ़ात ख़्वातीन अकाबिर, बिनात, तैय्यबात, अज़्वाजे मुतहरात की मुक़ल्लिद थीं। जिन्होने ज़िन्दगी के हर हिस्से में अपने बाद आने वाली नस्लों के लिये बेहतरीन मिसालें छोंड़ी थीं और ज़िन्दगी के हर मामले में "उस्व–ए–हुस्ना" पेश किया था।

सहाबियात रज़ि0 के अलग–अलग कारनामों और ख़िदमतों के सिलसिले में सबसे ऊपर हज़रत ख़दीजा रज़ि0 उम्मुल मोमीनीन की ख़िदमतें हैं जिन्होनें शुरू से हुज़ूर सरवरे कायनात स0अ0 का हर तरह से साथ दिया और इस्लाम के बढ़ावे में बड़ा काम किया और ज़िन्दगी के दूसरे हिस्सों में मिसाली किरदार अदा किया। अपनी पाक दामनी की बिना पर ताहिरा के लक़ब से मशहूर हुईं, औरतों में सबसे पहले ईमान लायीं और आप स0अ0 का हर तरह से साथ दिया।

ग़ार–ए–हिरा में जब हुज़ूर स0अ0 पर पहली वही नाज़िल हुई और आप घर वापस तश्रीफ़ लाये तो अल्लाह के जलाल से लबरेज़ थे। आप स0अ0 ने हज़रत ख़दीजा से फ़रमाया, मुझको कपड़ा उढ़ाओ और फिर पूरा मामला सुनाया और फिर फ़रमाया मुझको डर है। हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ने फ़रमाया, आप घबराइये नहीं, ख़ुदा आपका साथ नहीं छोड़ेगा क्योंकि आप सिलारहमी करते हैं, बेकसों और फ़कीरों के काम आते हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं और मुसीबत में पड़े लोगों के हक़ में हिमायत करते हैं। और फिर वो अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा इब्न नोफ़ल (जो नसरानी मज़हब के थे) के पास ले गयीं, जिन्होने आप से वाक़्या सुनकर नबूवत की बशारत सुनायी।

हज़रत ख़दीजा आपकी बीवी थीं, दिन रात साथ थीं, साथ नवाफ़िल अदा करती थीं।

आप स0अ0 को मक्का के मुश्रिकों से मुसीबतें उठानी पड़ती थीं और उन पर जो आप स0अ0 को सदमा पहुंचता, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के पास आकर दूर हो जाता, इसलिये हज़रत ख़दीजा आप स0अ0 को पूरी तसल्ली देतीं।

मक्का के मुश्रिक जब आप स0अ0 और आप स0अ0 के ख़ानदान को "अबू तालिब की घाटी" में महसूर (क़ैद) किया तो हज़रत ख़दीजा रज़ि0 भी आप स0अ0 के साथ थीं।

जब तक हज़रत ख़दीजा रज़ि0 ज़िन्दा रहीं, कुफ़्फ़ार मक्का को खुल कर हुज़ूर स0अ0 को परेशान करने में रुकावट महसूस होती थी। लेकिन उनके इन्तिक़ाल के बाद कुरैश ने खुलकर सताना शुरू कर दिया। इसीलिये हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के इन्तिक़ाल के साल को ग़म का साल कहा जाता है।

हुज़ूर अक़दस स0अ0 ने फ़रमाया कि दुनिया में अफ़ज़ल तरीन औरतें मरियम और ख़दीजा हैं।

इल्म व फ़न में से वाक़फ़ियत में बड़ा दरजा रखती हैं। सहाबियात में बहुत सी ऐसी औरतें गुज़री हैं, जो तफ़सीर व क़िरात, हदीस व फ़िक़, फ़राएज़–अदब और दूसरे इल्म व फ़न में महारत रखतीं थी। उनमें सबसे ऊपर उम्मुल मोमीनीन हज़रत आयशा रज़ि0, उम्मुल मोमीनीन हज़रत हफ़्सा रज़ि0, हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 हैं, जिनमें से कई को पूरा क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ था। तफ़सीर में हज़रत आयशा को कमाल हासिल था। हदीस की रिवायत में हज़रत आयशा रज़ि0, हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0, हज़रत उम्मे अतिया रज़ि0, हज़रत असमा बिन्त अबू बकर, हज़रत उम्मे हानी रज़ि0 और हज़रत फ़ातिमा बिन्त क़ैस के नाम आते हैं जिन्होने बहुत सी हदीसें बयान की थीं।

फ़िक़ में हज़रत आयशा रज़ि0 के बेशुमार फ़तवे हैं, उनके अलावा हज़रत उम्मे सलमा रजि0, हज़रत सफ़िया रज़ि0, हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि0, हज़रत जुवेरिया रज़ि0, हज़रत मैमूना रज़ि0, हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि0, उम्मे अतिया रज़ि0, उम्मुल अरवा रज़ि0, उम्मे शरीक रज़ि0, आतिका बिन्त ज़ैद रज़ि0, सहला बिन्त सुहैल रज़ि0, अस्मा बिन्त अबी बकर, फ़ातिमा बिन्त क़ैस के नाम आते हैं जिनके फ़तवे मौजूद हैं।

अमली कामों में कारोबार का एक वर्ग है जिसमें सिलाई, खेती, कपड़ा बुनना है। इन कामों में बहुत सी सहाबियात रज़ि0 कमालात रखती थीं।

दीन की हिफ़ाज़त और इस्लाम की ख़िदमत व फैलाव अहम काम है। इसी काम में लगभग सारी सहाबियात दिलचस्पी लेतीं थीं, लेकिन कुछ सहाबियात इसमें श्रेष्ठतम्

थीं। हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 बिन्त ख़िताब की दावत पर उनके भाई हज़रत उमर रज़ि0 ने इस्लाम कुबूल किया। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 की कोशिश पर हज़रत अबू तलहा मुसलमान हुए। हज़रत उम्मे हकीम रज़ि0 की दावत बढ़ावा देने पर उनके शौहर अकरमा इब्ने अबूजहल जो यमन भाग गये थे, वापस आकर हुज़ूर स0अ0 के आस्ताना आलिया पर हाज़िर होकर ईमान लाये। उम्मे शरीक रज़ि0 दोसिया की दावत पर कुरैश की बहुत सी औरतों ने इस्लाम कुबूल किया।

जिहाद इस्लाम का अहम फ़रीज़ा है। सहाबा किराम रज़ि0 ने जिस ज़ौक़ व शौक़ से इसमें हिस्सा लिया, इसके क़िस्से इस्लामी इतिहास में सैंकड़ों पन्नों पर बिखरे हुए हैं। लेकिन इसको भुलाया नहीं जा सकता कि सहाबियात रज़ि0 ने अपनी ताक़त, हैसियत और अपनी बिसात भर अहम कामों को अन्जाम दिया। इनका जोश अख़लाक़, इरादा व इस्तिक़लाल अपने शौहरों, भाइयों, बुज़ुर्गों और लड़को से कम न था। उहद की जंग में जब काफ़िरों ने हमला कर दिया था, तो हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ि0 हुज़ूर अक़दस स0अ0 के पास पहुंची और दुश्मनों के तीरन्दाज़ों के सामने खड़ी हो गयीं और हुज़ूर अक़दस स0अ0 की हिफ़ाज़त करने लगीं। इब्ने क़िमिया हुज़ूर अक़दस की तरफ़ बढ़ा और हमला कर दिया, हज़रत अम्मारा रज़ि0 ने हमला रोका और सामने पड़ जाने की वजह से उनके कांधे पर ज़ख़्म आ गया। उन्होने इसकी परवाह नहीं की और इब्ने क़िमिया पर तलवार चला दी। मुसलमीया की जंग में बहादुरी से मुक़ाबला किया और बारह ज़ख़्म खाये, एक शहीद हुआ। ख़न्दक़ की जंग में हज़रत सफ़िया रज़ि0 ने एक यहूदी दुश्मन को ख़त्म किया। हुनैन की जंग में उम्मे सुलेम हथियार लेकर सामने आयीं। यरमूक की जंग में हज़रत असमा बिन्त अबी बकर रज़ि0, हज़रत उम्मे रियान रज़ि0, ख़ौला रज़ि0, उम्मे हकीम रज़ि0, उम्मुल मोमीनीन जुवेरिया रज़ि0 और हज़रत असमा बिन्त यज़ीद ने बहादुरी से दुश्मनों का मुक़ाबला किया। 28 हिजरी में क़बरस को फ़तेह करने में हज़रत उम्मे हराम रज़ि0 ने मुसलमान लश्कर में शिरकत की।

ये तो हथियार लेकर जंग में हिस्सा लेने का हाल था, ऐसी भी सहाबियात थीं जिन्होनें अलग–अलग जंगों में दूसरी ख़िदमतें अन्जाम दीं, जैसे पानी पिलाना, ज़ख़्मों की मरहम पट्टी करना, शहीदों और ज़ख़्मियों को उठा–उठा कर महफ़ूज़ जगहों पर लाना। तीर उठा–उठा कर लड़ने वालों को देना, खाने पीने का इन्तिज़ाम करना। लड़ने वालों को हिम्मत दिलाना, इन सारे कामों में निम्नलिखित औरतें आगे–आगे रहती थीं।

हज़रत आयशा रज़ि0, हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि0, हज़रत उम्मे सईत रज़ि0, हज़रत रबीअ बिन्त मुअव्वज़ रज़ि0, हज़रत उम्मे ज़्यादा रज़ि0, हज़रत उम्मे अतिया रज़ि0, हज़रत हिन्दा रज़ि0, हज़रत ख़ौला रज़ि0, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 वग़ैरह। इसमें कुछ तो मश्क़ भर–भर कर ज़ख़्मियों को पानी पिलाती थीं, कुछ ज़ख़्मियों की तीमारदारी करती थीं, कुछ घायलों को उठाकर मैदाने जंग से मदीना मुनव्वरा लातीं थीं, कुछ ने चरख़ा कात कर मुसलमानों की मदद की थी, कुछ तीर उठाकर लाती थीं, कुछ खाना पकाकर खिलाती थीं, और कुछ ने तो क़ब्र खोदने तक की ख़िदमत भी अन्जाम दी। और कुछ हिम्मत दिलाने के लिये शेर भी पढ़तीं थीं और लड़ने वालों को जोश दिलातीं थीं।

अल्लाह का इश्क़ और रसूल स0अ0 की मुहब्बत में सहाबियात सहाबा से कम न थीं, उहद की जंग का मशहूर वाक़्या है कि जब मुसलमानों की शिकस्त का शोर हुआ तो एक सहाबी औरत अपने घर से बे तहाशा निकलीं कि सरवरे कायनात स0अ0 का क्या हाल है।

एक साहब मिले उन्हाने ख़बर दी कि तुम्हारे शौहर शहीद हो गये, उन्हाने इन्ना लिल्लाह पढ़ी और पूछा हमारे आक़ा का क्या हाल है?फिर उनको ख़बर दी गयी कि तुम्हारे भाई शहीद हो गये, आशिक़े रसूल बीबी बोलीं मुझे तो हुज़ूर अक़दस स0अ0 का हाल बताओ। इसके बाद उनको बताया गया कि आप स0अ0 हिफ़ाज़त से हैं, नेक दिल बीबी ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया, मगर आगे बढ़ती गयीं। जब तक कि सरवरे कायनात स0अ0 की ज़ियारत नसीब न होगी चैन न आयेगा। सामने नबी के चाहने वालों के झुरमुट में आप स0अ0 नज़र आये, वो बीबी सरापा शौक़ बनकर आगे बढ़ीं, अपनी शौक़ भरी निगाहों से दुनिया के आफ़ताब के दीदार पुर अनवार से मुश्र्रफ़ हुईं। और इज़्ज़त व एहतराम का ज़िक्र मौलाना शिबली ने कुछ शेरों में किया है वो बजाए ख़ुद बेहतर असरदार हैं।

संक्षेप में ये कि ज़िन्दगी के हर हिस्से में सहाबी बीबियों रज़ि0 ने अपने बाद आने वाली औरतों के लिये बेहतरीन नमूना छोड़ा है। जिसकी मुख़तलिफ़ तफ़सील किताबों में मिलती है। ख़ास तौर पर सदहा सहाबियात रज़ि0 के हालात पर लिखी गयी हैं। और ये भी फ़ख़्र की बात है कि उलमा ने इस बारे में कोई कोताही नहीं की बल्कि तज़किरह करने वालों ने मुस्तिक़ल और ज़िमनी तौर पर सदहा सहाबियात के हालात लिखे हैं। इन तज़किरह करने वालों में इब्ने असीरा, इब्ने साद ज़ोहरी हाफ़िज़, इब्ने हजर अस्क़लानी ख़ास तौर पर काबिले ज़िक्र हैं जिन्होने सहाबियात के हालात लिखने में काफ़ी दिलचस्पी ली है। और वो बहुत हद तक कामयाब रहे। इन हज़रात की लिखावटें, औरतों की तारीख, इस्तेयाब, असाबा, तबक़ातुस्सहाबा, असदुन्नियाबा, तहज़ीबुत्तहज़ीब हैं। इन किताबों में से किसी में 398, किसी में 627, किसी में एक हज़ार सहाबियात रज़ि0 से ज़्यादा के हालात हैं। और इनमें सबसे ज़्यादा हालात इब्ने हजर अस्क़लानी की किताब असाबा की आठवीं जिल्द ख़ास औरतों के हालात पर आधारित है। यानि इस हिस्से मे लगभग 1545 औरतों का तज़किरा है। (शेष पेज 13 पर)

हमारा किरदार ग़ैर मुस्लिमों में

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मुसलमानों की सामूहिक ज़िन्दगी, दावत और जिहाद के अमल पर आधारित है और दोनों के लिये जनाब रसूलुल्लाह स0अ0 की ज़िन्दगी से पूरी रोशनी मिलती है और इसी से रहनुमाई और ताक़त हासिल करना है। अपने ज़ाति रूझान पर नहीं। लेकिन आम तौर पर ये होता है कि ग़ैरो से हमें जो तकलीफ़ें पहुंची और ताक़तवर दुश्मनो से जो तकलीफ़ें पहुंची, उन्होने हममे एक रद्देअमल पैदा कर दिया। जो इन्तिक़ामी जज़्बे की सूरत में जगह–जगह ज़ाहिर होता रहता है। इन्तिक़ाम लेना हर मज़लूम का हक़ है और अगर मज़लूम में इन्तिक़ामी कैफ़ियत पैदा हुई तो उसके इस तर्ज़अमल को बग़ावत की बात समझा जाएगा। अगर मज़लूम को इस्लाम की तरफ़ से इन्तिक़ाम का हक़ दिया गया है, लेकिन इसके साथ ये सही नहीं कि इन्तिक़ामी जज़्बे में ग़लती करने वाले और ग़लती न करने वाले में कोई फ़र्क़ न किया जाए। और ज़ालिम से गुस्सा होकर उसके संबंधियों पर भी गुस्सा उतार दिया जाए जिसने ज़ुल्म नहीं किया। फिर ये देखना अक़्ल की बात है कि इन्तिक़ाम ले लेने और गुस्सा उतार लेने के अलावा और कोई बात फ़ाएदेमन्द हो सकती हो तो उस पर भी ग़ौर किया जाए और अख़्तियार करने के लायक़ हो तो अपनाया जाये। और ये देखने की कोशिश की जाए कि उसके ज़ुल्म के पीछे कोई ऐसा कारण तो नहीं जिसका संबंध हमारी किसी कमज़ोरी या ग़लती से हो।

आख़िरी नबी हुज़ूर स0अ0 ने दीन का काम दावत से शुरू किया, और दावत में अल्लाह तआला के रब होने और एक होने को तस्लीम कराया और बन्दगी के तक़ाज़े पूरा करने के साथ–साथ आम इन्सानी हमदर्दी और मकारिम अख़लाक़ को तरीक़ा बनाया। यही वजह थी कि लोगों को आपकी दावत से इख़्तिलाफ़ बल्कि मुख़ालिफ़त के बावजूद आपसे हमदर्दी थी जो आपको अमानतदार, सच्चा और नेक तबियत समझने के वाक़्यात से ज़ाहिर है। अबूजहल ने एक बार आपको सख़्त ज़बानी से तकलीफ़ दी, आपने मौक़ा ऐसा महसूस किया कि सख़्त लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाये, आपने फ़रमाया कि मैं वो बात लाया हूं कि जिसके ज़रिये तुम लोग कटोगे, इस पर लोग ये कहने लगे कि आप तो बुरा लगने वाला रवैया नही अपनाते थे, यानि दुश्मनों ने शहादत दी कि आप का रवैया आम तौर पर सब्र का रहा।

आप स0अ0 जहां नर्म और सब्रदार थे कि आप के दुश्मन भी ये कहें कि आप ऐसा सख़्त रवैया नहीं अख़्तियार किया करते वहां ये बात भी थी कि जहां जहां जिहाद व कत्ल का मौक़ा आया वहां आप स0अ0 ने अपने हाथ से भी क़त्ल किये। वहां कोई ढ़ीलापन नहीं किया। आपकी मक्की ज़िन्दगी अपना अलग रंग रखती है और मदनी ज़िन्दगी अलग रंग, और दोनों में कभी–कभी वो लम्हे भी आये ज़िसमें तर्ज़ अलग हो जाता। ये सब मौक़ा व महल का लिहाज़ रखने और मक़सद पर नज़र रखने से होता था। इसलिये ताएफ़ जब आप स0अ0 हमदर्दी हासिल करने के लिये गये थे और वहां हमदर्दी नहीं मिली बल्कि निहायत ही ग़ैर इन्सानी तरीक़े से आपको मायूस किया गया और एक फ़रिश्ता भेजा गया कि आप कहें तो पहाड़ों के बीच ये रहते हैं, पहाड़ों से दबा दिये जांए, आपने दुखे दिल के बावजूद ये फ़रमाया कि नहीं!! अगर ये नहीं तो इनकी औलादे इस्लाम ले आयेंगी।

हम अगर मुसलमानों के बीच रह रहे हैं तो हमारी क्या ज़िम्मेदारी है? और अगर ग़ैर मुस्लिमों के बीच है तो हमारी क्या ज़िम्मेदारी है? रवादारी बरतने के हालात कौन से हैं और इन्तिक़ामी जज़्बा अख़्तियार करने के कौन से हैं? फिर ये देखना कि केवल दुश्मन की शरपसन्दी से हालात में ख़राबी है या हमारी कोताही और लापरवाही का भी हाथ है। इन बातों पर नज़र रखते हुए अमल का तरीक़ा अख़्तियार करना समझदारी है।

इन बातों का अगर हम इन्साफ़ के साथ जाएज़ा लें तो कम से कम हिन्दुस्तान के इस मुल्क में हमारी कोताही का भी अच्छा ख़ासा हिस्सा निकलेगा। हमने इस्लाम की तालीम को वाज़े करने और मुसलमानों की इन्सानियत दोस्ती के किरदार का मुज़ाहिरा करने में बड़ी कोताही की है। इसका सुबूत ये है कि कई बार हमको अपने पड़ोस में कई–कई दशकों तक ग़ैर मुस्लिमों से वास्ता पड़ा है लेकिन उनको ये तक नहीं मालूम होता कि इस्लाम में ग़ैरमुस्लिमों के साथ क्या किरदार बताया गया है। उसको ये नहीं मालूम होता कि इस्लाम का मोटा–मोटा मतलब क्या है। उसके विपरीत उसको मुसलमानों से ख़ौफ़ मालूम होता है। (शेष पेज 7 पर)

मौलाना डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

ज़िन्दगी और मानवीय समाज के निर्माण में दिल का किरदार

दुनिया में कितने लोग ऐसे हैं जिन्हें हर समय अपने दिल को ग़लत ख़्यालों से पाक रखने की फ़िक्र रहती है। अगर इन्सान का दिल ग़लत ख़्यालों औ ऐबों से पाक होता है तो वो इन्सानी प्रकृति के अनुसार काम करता है और इसमें कोताही और ग़लत काम नहीं होते हैं। इसकी मिसाल उस सही मशीन से दी जाती है जिसके सभी पुर्ज़े बराबर काम करते रहते हैं। और मालिक को उन पर विश्वास होता है। अगर ये मशीन यूं ही छोड़ दी जाए और उसके तेल को निकाल कर नया तेल ना डाला जाए और ख़राब पुर्ज़ों को बदला न जाए तो मालिक को इससे मुनाफ़ा हालिस नहीं होगा। और वो अपना काम करना भी छोड़ देगी। जिसके कारण ये सरगर्मियां ठप हो जाएंगी। दिल इन्सान के दिल में ताक़त का मुख्य स्त्रोत है। रगों तक खून पहुंचाने का यंत्र है। जब वो ठीक होता है तो पूरे जिस्म की व्यवस्था ठीक से काम करती है। दिल जिस तरह से मनुष्य के शरीर का केन्द्र होता है उसी प्रकार रूहानी व्यवस्था का भी केन्द्र होता है। जब दिल पाक होता है तो इन्सान का हर काम दुरुस्त व पाकीज़ा होता है। और इसके द्वारा हर मनुष्य के आवश्यकता की पूर्ति होती है। यही दिल जब अल्लाह के ज़िक्र से भरा रहता है तो इसके हामिल को रूहानी ग़िज़ा मिलती रहती है। जिसकी वजह से वो नर्मी की जगह पर नर्मी और सख़्ती की जगह पर सख़्ती का रवैया अपनाता है।

इसके विपरीत एक गुनहगार व झूठे व्यक्ति के दिल में गुनाह करने के बाद ज़रा सी कसक पैदा नहीं होती। वो बुरे कामों में व्यस्त रहता है। रसूलुल्लाह स0अ0 के क़ौल व नफ़्स की शैतनत के बीच तमीज़ पैदा नहीं करता। वो गुनाह का इतना आदी और रसिया हो जाता है कि फ़ितरत भी उससे पनाह मांगती है और वो शराफ़त व नजाबत, सब्र व क़नाअत, और सलाह व तक़्वे के लबादे को उतार कर फेंक देता है। और क़ुरआन करीम में ऐसे ही लोगों का ज़िक्र है: (हरगिज़ ऐसा नहीं! बल्कि उनके दिलों पर उनके बुरे आमाल का रंग बैठ गया है)

आक़ा–ए–मदनी जनबा रसूलुल्लाह स0अ0 के आने से पहले लोगों के दिलों पर ग़फ़लत का ग़ल्बा था। उन पर कुफ़्र व शिर्क का मोटा रंग बैठ गया है। ईमान व अमल की कोई झलक भी नहीं दिखाई देती थी। शराब पीना और बेहयाई ने वहां के लोगों को संजीदगी से सोचने का मौक़ा ही नही दिया। उनकी ज़िन्दगियां भी उथल पुथल का शिकार थी। उनकी ज़िन्दगी शक़ावत व क़सावत से ख़ाली थी। ज़लालत व गुमराही आम थी और ज़ुल्म व ज़्यादती का बाज़ार उनके अन्दर गरम रहता था। ऐसे हालात में उनके बीच आप स0अ0 की आमद हुई। और आप स0अ0 के कन्धों पर नबूवत की ज़िम्मेदारी डाली गयी। और तालीम व तरबियत और लोगों के दिलों की सफ़ाई की ताकीद फ़रमायी गयी। ग़रज़ ये कि नबूवत के चहारगाना सदाक़त से फ़ाएदा उठाने को कहा गया। क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनवादः ख़ुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उनमें उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा जो उनको ख़ुदा की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं और उनको पाक करते हैं और ख़ुदा की किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग बहुत गुमराही में थे)

आज अगर हम समाज का एक निरीक्षण करें तो लोगों को फ़हश कामों और मुनकिरात में लगा हुआ पायेंगे। मक्कारी और जालसाज़ी में वो इतने बढ़ चुके हैं कि उनकी कोई मिसाल नहीं मिलती। मालूम होता है कि उनके दिलों पर मुहर लग गयी है। हुज़ूर अकरम स0अ0 की वो हदीस हमें याद आती है जिसमें आप ने फ़रमाया कि इन्सानी जिस्म में गोश्त का एक ऐसा लोथड़ा है कि अगर वो सही रहता है तो पूरा जिस्म सही रहता है। और अगर वो बिगड़ जाता है तो पूरी व्यवस्था बिगड़ जाती है। सुन लो वो दिल है।

अस्ल में दिल ही इन्सान के ख़्यालों का सरचश्मा है। वो खुशी और नाराज़गी, सलाह व फ़साद, नेकी का हुक्म देने और बदी से रोकने और मुहब्बत व दुश्मनी के इज़हार का मरकज़ है इसी कारण इसकी पाकी का ख़्याल रखना, इसको इत्मिनान व सुकून पहुंचाना बहुत ज़रूरी है। इस हक़ीक़त से दुनिया के अक्सर इन्सान अनजान हैं। यहां तक कि अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यकारों और विभिन्न सभ्यताओं के मतवाले भी इससे अनजान हैं। उन्हे इसकी भी ख़बर नहीं कि सभ्यता के निर्माण व बिखराव में इसका क्या किरदार रहा है। इस किरदार से अनजानेपन ही ने यूरोप के वासियों को दिल का मरीज़ बना दिया है, जिसकी वजह से वहां अत्यधिक दिल के दौरे पड़ते हैं।

आख़िरकार उसकी सर्जरी करते हैं, उसको बदलते हैं, दिल की बीमारी के कुछ माहिरों का कहना है अल्लाह के ज़िक्र ही से दिल को तमाम बीमारियों से पाक साफ़ रखा जा सकता है। जो बन्दा सच्चे दिल से अल्लाह के सामने रोता है और गिड़गिड़ाता है उसको दिल की अन्दरूनी व ज़ाहिरी कोई बीमारी नहीं होती। दीनी एतबार से दिल ईमान का केन्द्र है। वो कभी अख़लाक़ी बीमारियों पर बन्दिश लगाने और इस्लामी समाज के निर्माण में ज़बान का नुमाइन्दा होता है। इसकी तरफ़ जनाब मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह स0अ0 ने एक हदीस में फ़रमायाः "तुममे से अगर कोई शख़्स बुराई देखे तो हाथ से ख़त्म करने की कोशिश करे, अगर उसकी ताक़त नही रखता तो ज़बान के ज़रिये इसको ख़त्म करे, अगर इसकी भी ताक़त नही रखता तो दिल से इसको बुरा समझे और ये ईमान का आख़िरी दर्जा है।"

कुछ लोगों ने केवल ये समझ रखा है कि दिल केवल रगों तक खून सप्लाई करने का यन्त्र है। इसी पर भरोसा करके उन्होने दिल की तासीर से आंखे चुराई और इसको साफ़ सुथरा रखने के साधन नहीं उपलब्ध कराए जिसकी वजह से वो नुक़सान में रहे। दिल को केवल रगों और जिस्म के पूरे हिस्से में खून पहुंचाने का यन्त्र समझना, अल्लाह के ज़िक्र से उसको पाक न करना और उसके काएदाना किरदार से ग़फ़लत बरतना सब ग़ैर दानिशमन्दाना और ग़ैर इस्लामी काम हैं। इस्लाम बिल्कुल इसकी इजाज़त नहीं देता बल्कि वो तो ज़िक्र व अज़कार तवज्जा व अनाबत इललल्लाह में व्यस्त रहने का हुक्म देता है। क्योंकि उनके ज़रिये इन्सान को फ़िक्री व रूहानी ग़िज़ा मिलती है और ऐसे लोगों के बारे में क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया हैः (अनुवादः जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है फिर वो उस पर क़ायम रहे उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे और (कहेगें) न ख़ौफ़ करो और न ग़म करो और जन्नत की जिसका तुमसे वादा किया जाता था ख़ुशी मनाओ) क़ुरआन करीम की इस आयत से ज़्यादा ताक़तवर कोई दलील क्या हो सकती है कि जिसमें ये फ़रमाया गया है कि ईमान के हामिलीन के क़ुबूल पर न दुनिया में ग़म का असर होगा और न आख़िरत में वो परेशान होंगे। वो जन्नत की सदाबहार न ख़त्म होने वाली नेमतों के बीच ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और उनको ऐसी दायमी ज़िन्दगी नसीब होगी जो कभी फ़ना नहीं होगी और ऐसी ख़ुशी हासिल होगी जिसका अन्दाज़ा इस दुनियावी ज़िन्दगी में नहीं लगाया जा सकता। यही वजह है कि इस्लाम धर्म इताअत और फ़रमाबरदारी में एक दूसरे से बराबरी करने और मानव समाज में अल्लाह के हुक्मों को लागू करने को बढ़ावा देता है और इस दीन के फैलाव पर उभारता है। जिसका सारा ध्यान दिल पर ही होता है। इस्लामी सभ्यता के उन बुनियादी स्तम्भों।

शेष : हमारा किरदार ग़ैर मुस्लिमों में

उसने केवल ये सुना है कि मुसलमानों के बुज़ुर्ग केवल मार–काट करते रहे। और अब उनके ये पैरोकार कुछ ऐसे ही ख़रतनाक जज़्बे के लोग हैं। फिर उनके लीडर और भी झूठी–सच्ची बातें बताकर मुसलमानों को शक के घेरे में लाकर नफ़रत से दिल भर देते हैं। ऐसी सूरते हाल में क्या हमारी ये ज़िम्मेदारी नहीं कि हम अपने ग़ैर मुस्लिम पड़ोसियों को इस्लाम के बारे में और मुसलमानों के बारे में बताएं? इनकी सही तस्वीर उनके सामने रखें और उनके ज़हनों में इस्लाम के बारे में आला तसव्वुर पैदा करने की कोशिश करें?

इस मुल्क में ग़ैर मुस्लिमों का इस्लाम के बारे में तसव्वुर सही करने की कोई सूरत नहीं रही इस काम की तरफ़ ध्यान कम से कमतर है। हिन्दुस्तान जैसे देश में जिसमें बहुत से धर्म की क़ौमें रहती हैं और मुसलमान अल्पसख्यंक भी हैं, ग़ैरमुस्लिमों की इस्लाम व मुसलमान के बारे में जो ग़लत मालूमात हैं उनको सही करने की कोशिश बहुत ज़रूरी है। और इस्लाम का जो रोशन चेहरा है उसको दिखाने की कोशिश करना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। ये काम दावत का भी है और दावत का काम और दूसरे सभी तरीक़ों पर मुक़द्दम और उनसे अफ़ज़ल है। इसके बाद दूसरे तरीक़े आते हैं जिनको ज़रूरत के हिसाब से अख़्तियार किया जा सकता है।

इस वक़्त सूरतेहाल ये है कि एक तरफ़ तो मुसलमानों ने वो सभी अख़लाक़ी और इन्सानी कमज़ोरियां और बुराइयां अख़्तियार कर ली हैं जो ग़ैर मुस्लिमों में पायी जाती हैं। और केवल जनगणना के आधार से मुसलमान होने पर ये विचार स्थापित किये हुए हैं ग़ैर मुस्लिमों से उनके सब इख़्तिलाफ़ात मुअरका हक़ व बातिल हैं और मुक़ाबिला पड़ गया तो ग़ज़वा–ए–बदर जैसी मदद उनके लिये भी आयेगी। इस वक़्त अफ़सोसनाक सूरतेहाल ये है कि हमारी सीरत व किरदार कमज़ोर, हमारी संजीदा कोशिश व जद्दोजहद नाक़िस, हमारी हिकमत अमली ग़ैर मुदब्बिराना, हमारे जज़्बात बेक़ाबू, हमारा तअल्लुक़ मअ अल्लाह मशकूक और ग़ैरों में हमारा तसव्वुर ख़राब है। ऐसी सूरत में केवल तलाक़ते लसानी और गरम लहजे और गर्म प्रदर्शनों से कहां तक काम चल सकता है?हमारा काम संजीदगी के साथ मौक़ा व महल का लिहाज़ करते हुए, हिकमते अमली तैयार करने, अपने किरदार को दुरुस्त करने और नर्म–गर्म दोनों मौक़ों के लिये हुज़ूर सैय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स0अ0 की ज़िन्दगी में सामूहिक ज़िन्दगी के अलग–अलग हालात से निपटने की जो सुन्नत रही है उसको अख़्तियार करने से ही काम चलेगा। इस हक़ीक़त को हमारे शासको को समझना चाहिये और आम मुसलमानों को भी समझना चाहिये।

मांगने वाला भिखारी है भीख मांगे या जहेज़

मौलाना शमसुलहक़ नदवी

मुसलमानों में या यूं कहिये कि इस्लामी शरीअत में पारिवारिक जीवन एक पवित्र रिश्ता है, जिसके ज़रिये दो अलग–अलग ख़ानदानों के दो लोग हमेशा के लिये दो जिस्म एक जान बन जाते हैं। अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवादः तुम दोनों के बीच मुहब्बत व हमदर्दी पैदा कर दिया, तुम दोनों का जुड़ना और इस्लामी आदाब के साये में घुल मिल कर एक हो जाना खुदा ही के नाम पर होता है इसलिये एक दूसरों के हुकूक़ की अदायगी में खुदा का पूरा ध्यान रखो कि वो तुम्हारे एक–एक सुलूक व बर्ताव से वाक़िफ़ है, तुम्हारी कोई बात उससे छिपी हुई नहीं रह सकती है) इरशाद हुआः (अनुवादः और खुदा जिसके नाम को तुम अपनी ज़रूरत पूरी करने का ज़रिया बनाते हो, डरो, और (उल्फ़त व मुहब्बत को ख़त्म करने से) अरहाम से (बचो) कुछ शक नहीं कि खुदा तुम्हें देख रहा है)

इस पाक रिश्ते को जोड़ते वक़्त भी इसका ध्यान और ख़्याल रखो कि इसका उद्देश्य क्या है और जुड़ने का तरीक़ा कितना आसान है। दो ख़ानदानों के दो जिगर गोशे मिलकर एक नये ख़ानदान की नींव डाल रहे हैं। उन दोनों में जितनी मुहब्बत व लगाव, एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान, अपनी–अपनी ज़िम्मेदारियों को सही तरीक़े से निभाने का जज़्बा व तरीक़ा होगा, उतना ही पाक, साफ़–सुथरा और खुदा व रसूल की नज़र में पसन्दीदा ख़ानदान वजूद में आयेगा और इसमें जितनी कमी होगी उसके अनुपात से ये ख़ानदान भी शर व फ़साद, हुकूक की पामाली और अलगाव व बिखराव होगा। इस सिलसिले मे यूं तो बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन इस वक़्त मैं जिस ख़ास पहलू की तरफ़ अपने पढ़ने वालों को ही नहीं बल्कि पूरी मिल्लते इस्लामिया और हिन्दिया के हर वर्ग को जो ध्यान दिलाना चाहता हूं वो है शादी ख़ाना आबादी को सौदेबाज़ी और ख़ाना ख़राबी में बदल देने का बढ़ता हुआ तबाह करने वाला रूझान जो जहेज़ की शक्ल में हमारे समाज को अपनी मज़बूत जड़ो से कसता जा रहा है। खुदा और रसूल ने इस लानत के बारे में, इसकी नहूसत व बेबरकती और ख़ाना ख़राबी के बारे में जो कुछ कहा और फ़रमाया है तो वो एक हक़ीक़त मुस्लिमा है उर्फ़ आम और हर ख़ास व आम की नज़र में जो बात बुरी समझी जाती है, ग़ैरत व खुद्दारी के ख़िलाफ़ समझी जाती है, इसके मद्देनज़र ये कहना चाहता हूं कि सिवाये उन फ़क़ीरों के जिनका पेशा ही भीख मांगना है और दर–दर हाथ फैलाना उनका मनचाहा काम है। दुनिया का हर इन्सान किसी और के सामने हाथ फैलाते कुछ मांगते और अपनी मुहताजगी ज़ाहिर करते शर्माता है। और किसी कमज़ोर व ज़रूरतमन्द के सामने हाथ फैलाना तो आख़िरी दर्जे की शर्मनाक बात है। और सिन्फ़े नाज़ुक कहलाती है। आम बोलचाल में भी और खुद इस्लाम में भी इसको सिन्फ़े नाज़ुक से ही ताबीर किया बल्कि सिन्फ़े नाज़ुक से भी आगे बढ़कर शीशाए नाज़ुक कहा गया है।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने एक सफ़र के मौक़े पर सवारियों को जिन पर औरतें सवार थीं तेज़ और बेढ़ंगे तरीक़े हांकने से हुए फ़रमाया, "ज़रा औरतों का ख़्याल करों"। उसकी इसी नज़ाकत, लताफ़त, घर की ज़ीनत व सुकून और दिल व जान की राहत (और उसके साथ उसका जोड़ा बनाया ताकि राहत हासिल कर सके) होने की वजह से ये फ़र्ज़ क़रार दे दिया गया कि औरत को अपने लिये दिल का सुकून बनाने और ज़िन्दगी को राहत का सामान बनाने के लिये अगर इसको कुबूल करना है तो मेहर की एक मिक़दार तय करना ज़रूरी ही नहीं बल्कि फ़र्ज़ है। और इसके बाद इसका हर तरह का तकल्लुफ़ भी अपनी हैसियत के मुताबिक़ ज़रूरी है। जब हक़ीक़त ये है तो ये कितनी उल्टी और ग़ैरत व खुद्दारी के ख़िलाफ़ बात होगी कि खुद उसी से जिसको दिल के सुकून व जिस्म की राहत बनाने का शौक़ है या उसके बाप व भाई के सामने अपनी मोहताजगी ज़ाहिर करे और भीख मांगे जहेज़ का नाम लेकर लड़की अपने को निकाह में दे रही है कि शौहर उसका पोषक होगा। दूल्हा या दूल्हे का बाप कह रहा है कि मैं भिखारी हूं, मुझे भीख दो तभी मैं तुम्हारी लड़की कुबूल करूंगा, मैं फ़क़ीर हूं मेरी कलाई

ख़ाली है मुझे घड़ी दे दे। मैं नंगा हूं कपड़ा बनवाने की सकत नहीं है, जोड़ा दे दे। मैं कंगाल हूं शौक़ शहज़ादे का है, मुझे स्कूटर दे दे। वीडियो, टेलीविज़न दे दे, दूसरे की कमाई पर शान झाड़ूंगा, फ़र्नीचर दे दो, चाय सेट, डिनर सेट दे दो, फ़क़ीरी में अमीरी का रूप धरूंगा। अपने दोस्त व अहबाब को दिखाते हुए ज़रा न शर्माऊंगा कि मेरी बीवी का लाया हुआ है जिनका मैं कफ़ील हूं। या हमारे समधी साहब का दिया हुआ है मेरी ग़रीबी दूर करने के लिये, उन्होने बेपनाह क़र्ज़ लेकर मेरे घर को रौनक़ बख़्शी है।

वो लड़की जिसने देखा कि मेरे पति या ससुर ने मुझे कुबूल करने के लिये मेरे शफ़ीक़ व मेहरबान बाप को, मेरे उस बाप को जिसके जिगर का मैं टुकड़ा हूं, क़र्ज़ के पहाड़ के तले दबा दिया है। हर वक़्त बाप की आह व कराह उसके कानों में गूंजती रहती है। इन ज़ालिमों से बीवी या बहू की हैसियत से कितनी मुहब्बत होगी। उसको अपने ससुराली लोगों पर कितना भरोसा होगा जो एक शरीफ़, ख़ुश किरदार बहू या बीवी की फ़िक्र से पहले इसके बाप की जेब व दामन पर नज़र करते हैं। ऐसी बीवी को अपने शौहर से कितनी मुहब्बत होगी या उस शौहर को उस बीवी से कितनी मुहब्बत होगी जिसको बीवी बनाने से पहले उसे दौलत पाने का ज़रिया बनाया है। बीवी और शौहर की मुख़लिसाना मुहब्बत व भरोसा और एक दूसरे के सुख–दुख के ख़्याल से तो घर की रौनक़ बढ़ती है और औलाद की सही तालीम व तरबियत होती है। दोनों तरफ़ के रिश्तेदारों के हक़ अदा किये जाते हैं और सिलारहमी क़ायम होती है जब उन्ही दोनों में माल की मुहब्बत दीवार बनकर खड़ी हो गयी है तो फिर वो सारे फ़ाएदे क्यों हासिल होंगे जो ख़ुद शादी का मक़सद है। इन जज़्बातों और एहसासों के साथ उनमें सलाह व रास्तबाज़ी, नेकी, अदब व लिहाज़, किरदार का हुस्न और इस्लामी शेआर का लिहाज़ कितना होगा।

जहेज़ के लालचियों की फ़क़ीरी ने माई हव्वा की कितनी बेटियों की अस्मत व इफ़्फ़त लूट ली है और कितनी ऐसी हैं जिनकी उम्र का बड़ा हिस्सा घुटन में गुज़र जाता है या मर्ज़ का शिकार हो जाती है। मां बाप बच्ची की फ़िक्र व ग़म में टी.बी. के मरीज़ की तरह बेचैनी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। हमारी कितनी वो बेटियां हैं जो घर के किसी कोने में हसरत के आंसू बहा रही हैं, और मां–बाप घुट–घुट कर मर जा रहे हैं। जहेज़ की इस लानत ने हमारे समाज को काफ़ी ख़राब स्थिति का सामना करना पड़ा है।

मुसलमानों! तुम्हारे दीन व मज़हब में निकाह व शादी ऐसा मुश्किल तो न था तुमने अपने हाथों दूसरी क़ौमों और धारों पर बहना शुरू कर दिया, तुमको तुम्हारे ख़ुदा ने सब्र व क़नाअत का हुक्म दिया था तुमने उसे माल पाने का ज़रिया क्यों बना रखा है, जिसका तुम्हे कफ़ील बनाया है, जो तुम्हारे बच्चे के हमल व पैदाइश की तकलीफ़ झेलेगी, वो तुम्हारे लिये लिबास होगी, तुम उसके लिये लिबास व पर्दा होगे, तुमने ख़ुदा की इस अज़ीम नेमत को जो तुमको इस अज़ीम जुर्म से बचाने का बहुत ही पाक बल्कि अर्ज व सवाब का ज़रिया है जिस पर तुमको संगसार किया जाता है, इसी को तुमने माल व दौलत पाने का ज़रिया क्यों बना लिया, ये नाक़द्री और ये बेहुरमती उसकी जिसके पांव तले जन्नत है, उसकी जिसकी परवरिश के सिले में रसूले ख़ुदा ने ये ख़ुश ख़बरी दी कि जिस दरवाज़े से चाहो जन्नत में दाख़िल हो जाओ, उसकी जिसकी देखभाल और उसके हुक़ूक़ की अदायगी की वसीयत व नसीहत ख़ुदा के रसूल अपने आख़िरी हज के ख़ुत्बे में भी न भूले और फ़रमायाः

(क्या तुम्हे याद नहीं कि रसूले इस्लाम ने, इस नबी बरहक़ ने, जिसने तुम्हारे सर पर सबसे अच्छी उम्मत का ताज रखा अपनी चहेती बेटी को उस चहेती बेटी को जिससे मुहब्बत का ये आलम था कि जब वो आतीं तो आप स0अ0 मुहब्बत से बेक़ाबू होकर खड़े हो जाते थे, जहेज़ में क्या दिया था क्या तुम्हे याद नहीं क्या तुम्हे याद नहीं कि चक्की पीसते और पानी ढ़ोते हाथ और जिस्म में निशान पड़ गये थे)

तुम्हारी इस्लामी ग़ैरत को किसकी नज़र लग गयी। तुम दूसरी क़ौमों की देखा देखी किस राह पर चल पड़े। तुम तो दूसरी क़ौमों के लिये नूर का मीनार थे फिर तुम कहां और किधर जा रहे हो। कान लगाकर सुनो ख़ुदाई आवाज़ आ रही हैः

(अनुवादः मोमिनों जितनी उम्मतें (यानि क़ौमें) लोगों में पैदा हुईं तुम उन सबसे बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से रोकते हो!) अपने कान तो खोलो तुम्हारे रसूल क्या फ़रमाते हैंः

(मेरी उम्मत के सब लोग जन्नत में दाख़िल होगें सिवाये उसके जिसने इनकार किया। आपने फ़रमाया जिसने मेरी इताअत की जन्नत में दाख़िल होगा और जिसने मेरी नाफ़रमानी की, उसने इनकार किया)

हम दिल पर हाथ रख कर सोंचे कि जहेज़ के मामले में हुज़ूर स0अ0 की इताअत कर रहे हैं या नाफ़रमानी?

मौलाना इलियास नदवी

जहन्नम क्या है?

जहन्नम जिसको दोज़ख़ भी कहा जाता है कुरआन व हदीस की रोशनी में असहनीय और तेज़ आग का वो गढ़ा है जिसकी गहराई का हाल ये है कि अगर उसके ऊपर से एक पत्थर डाल दिया जाए तो उसकी तह तक पहुंचने में उसको सत्तर साल लगेंगे। उसकी दीवार की चौड़ाई इतनी है कि एक आम इन्सान को उस पर चलने में सात साल लगेंगे। जहन्नम के कुल सात दरवाज़ें हैं और सत्तर हज़ार लगामें हैं। हर लगाम इतनी बड़ी है कि उसको खींचने के लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से तैनात हैं। उसकी आग की तेज़ी का ये आलम है कि उसको तीन हज़ार साल तक लगातार झोंका गया है, जिससे उसका रंग काली अंधेरी रात की तरह हो गया है जो आग इस दुनिया में हम जलाते हैं वो जहन्नम की आग का सत्तरवां हिस्सा है और उसकी चिन्गारियां दुनिया के महलों की तरह बड़ी और ऊंची हैं। सबसे कम अज़ाब जिस व्यक्ति को दिया जाएगा उसको सिर्फ़ आग की दो जूतियां पहनाई जांएगी उसका ये हाल होगा कि उसका दिमाग़ गरम पानी की हांड़ी की तरह खौलता होगा और वो समझेगा कि सबसे बड़ा अज़ाब उसी को दिया जा रहा है। जहन्नम की चीख़ पुकार इतनी तेज़ होगी की जैसे गुस्से से अभी फट जाएगा उसका ईंधन वो इन्सान होंगे जिन्होने दुनिया में अपने बनाने वाले मालिक से बग़ावत की। बाग़ियों को आग के इस गढ़े में खम्बों से बांध दिया जाएगा और ऊपर से दरवाज़ा भी बन्द कर दिया जाएगा ताकि वो बाहर निकलने की कोशिश भी न कर सकें। हाथ में बेड़ियां होंगी, और पैरों में सत्तर गज़ लम्बी ज़ंजीरे और गले में तौक़, औंधे मुंह घसीट कर पहले गरम पानी में फिर जहन्नम में डाल दिया जाएगा। उनके कपड़े सख़्त गर्म आग वाले पिघले हुए तांबे के होंगे। आग उनके चेहरों को झुलसा देगी जिससे उनके होंट लटक कर नाफ़ तक पहुंच जांएगे और ऊपर सिकुड़ कर बीच सर तक। अल्लाह जहन्नम को एक गर्दन देगा जिसकी दो आंखे होंगी और एक ज़बान। ज़बान से वो कहेगी कि आज मैं उस व्यक्ति पर डाली गयी हूं जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया फिर वो हिसाब किताब के मैदान में अपने शिकार को चुन–चुन कर ले जाएगी। इसमें ऊंटो की तरह सांप, खच्चरों की तरह बिच्छू होंगे जिनके ज़हर का ये आलम होगा कि वो जहन्नमियों को डसेंगे तो चालीस साल तक उनको दर्द होता रहेगा। जब उनको प्यास लगेगी तो उनको खौलता हुआ पानी दिया जाएगा जिससे उनकी आंते टुकड़े–टुकड़े हो जांएगी या फिर ज़ख़्मों के पीप पिलाये जाएंगे जिसको वो घुंट–घुंट कर पियेगें और बड़ी ही मुश्किल से अपने गले से उतार पायेगें। भूख लगने पर कड़ुआ, बदबूदार और आग से भी ज़्यादा गरम ज़क्कूम के पेड़ का फल दिया जाएगा जो गले में अटक जाएगा। जिसकी कड़ुवाहट का ये हाल होगा कि उसकी एक बूंद भी इस दुनिया के सभी इन्सानों के खानों में मिला दी जाए तो सबका खाना कड़ुवा हो जाये। उनके सरों पर खौलता हुआ पानी भी डाला जाएगा जिससे पेट के अन्दर की चीज़ें बाहर निकल कर आयेगी अगर वो जहन्नम से निकलने की कोशिश करेंगे तो उनको लोहों के ऐसे गुर्जों मारा जाएगाय जिसे दुनिया के तमाम इन्सान और जिन्नात मिलाकर भी न उठां सकें। और जिसकी एक मार से पहाड़ों के टुकड़े–टुकड़े हो जांए। जहन्नम में आग के ऐसे पहाड़ होंगे जिस पर दोज़ख़ी को सत्तर साल तक चढ़ाया जाएगा और सत्तर साल तक ऊपर से नीचे गिराया जाएगा लगातार रोने से जब उनके आंसू बन्द हो जाएगें तो खून के आंसू जारी होंगे। अज़ाब से तंग आकर जहन्नम वाले अल्लाह से मौत मांगेगे ताकि उनका काम तमाम हो जाए और जहन्नम से उनको छुटकारा मिल जाए इसपर जवाब मिलेगा कि तुमको हमेशा इसी में रहना है फिर वो अल्लाह से निवेदन करेंगे कि कम से कम एक दि नही ये अज़ाब हमसे टल जाए। यह भी नही स्वीकार किया जाएगा। अतंतः वो अपने जुर्मों को स्वीकार करते हुए कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हम अपने दुर्भाग्य ही से गुमराह हुए अब हमें यहां से निकाल दीजिए। हम दोबारा ये अपराध नहीं करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमांएगे ज़िल्लत के साथ इसी में रहो और तुम्हारी करतूतों ही की सज़ा दी जा रही है। इसके बाद गधों की तरह चीखेंगे चिल्लाएगें और उनके चेहरे बिगड़ जांएगे। आग जब–जब भी उनकी खालों को जलाकर राख कर देगी तो खुदा के हुक्म से दूसरी खाल आ जाएगी और ये सिलसिला चलता रहेगा। जहन्नम में जाने वालों को कभी मौत नहीं आयेगी। चीखते रहें या सब्र करें। हर हाल में उनको उसमें रहना होगा जब–जब काफ़िरों को उसमें डाल दिया जाएगा। तब–तब जहन्नम के दारोग़ा उनसे पूछेंगे कि कोई इससे पहले तुमको डराने वाला नहीं आया था तो वो कहेंगे कि आया तो था लेकिन हमने उसे झुठला दिया था काश हम अपनी अक़्ल से काम लेते तो आज इस जगह न होते।

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

निकाह व तलाक़ की नाजाएज़ रस्में और ग़लत तरीक़े

आप स0अ0 ने हर तरह की मुसीबतें व मुश्किलें बर्दाश्त करके एक नेक समाज का निर्माण किया था। आप के आने के समय समाज में तरह–तरह की बुराईयां और ख़राबियां और बेहयाईयां फैली हुईं थीं। आप स0अ0 ने एक–एक को चुन–चुन कर मिटा दिया और हर तरह की बुराईयों और ख़राबियों से पाक और मिसाली समाज वजूद में लाने में कामयाब हुए जिसको देखकर दुश्मन भी दंग रह जाते थे, और न चाहने के बावजूद अपने को उससे बचा नहीं पाते थे। सहाबा किराम रज़ि0 आप स0अ0 की सच्ची मुहब्बत से सरशार थे। उन्होने अपनी पूरी ज़िन्दगी आप स0अ0 की हिदायत की रोशनी में बदल डाली। पूरे तौर से इस्लामी रंग में रंग गये। इसीलिये इतिहास गवाह है कि ये कुदसिया नुकूश दुनिया के जिस इलाक़े में पहुंचे वहां उन्होने इन्क़िलाब पैदा कर दिया। इतना ज़बरदस्त असर डाला कि लोगों ने न केवल उनके दीन यानि दीने इस्लाम को कुबूल कर लिया बल्कि उनके चाल, ढ़ाल, अन्दाज़ और आदतें यहां तक कि ज़बान यानि अरबी को भी अख़्तियार कर लिया।

लेकिन अब इस मुबारक दौर से दूरी की वजह से मुस्लिम समाज फिर बहुत सारी ख़राबियों, रस्मों और बुराईयों का शिकार हो गया है, इसके कारण खुद उनको भी परेशानियां झेलनी पड़ती हैं। साथ ही उन ख़राबियों की वजह से न केवल ये कि लोग बदज़न हो जाते हैं बल्कि अनजान लोग ये समझते हैं कि ये ख़राबियां उनके धर्म इस्लाम के कारण से हैं, और इस तरह से वो इस्लाम ही से नफ़रत का शिकार हो जाते हैं। ये कितने अफ़सोस की बात है, मुस्लिम समाज को तो मिसाली समाज होना चाहिये था लेकिन जिस तरह सहाबा किराम रज़ि0 का समाज था कि लोग उसको देखकर प्रभावित हो जाते थे, उनके अन्दर उसे अपनाने का जज़्बा पैदा होता, और पूरे के पूरे इलाक़े इस्लाम में दाख़िल हो जाते थे लेकिन हो इसके विपरीत रहा है। इसलिये ज़रूरत है कि हम अपने समाज का जाएज़ा लें और ग़लत रस्मों को मिटाने की कोशिश करें।

ग़ौर करने की बहुत सी बातें हो सकती हैं लेकिन हम यहां केवल निकाह व तलाक़ में निकल कर आने वाली बुराइयों को बतौर मिसाल अर्ज़ करना चाहते हैं, जिनकी वजह से मुसलमानों की जग हंसाई होती है और खुद मुस्लिम समाज उनके कारण परेशानियों का शिकार है।

आंहज़रत स0अ0 ने निकाह को अपना तरीक़ा बताया। क़ुरआन मजीद ने इसकी इजाज़त दी। फ़ुक़्हा ने इस सिलसिले में तफ़सील बयान कीं और ज़िक्र किया कि निकाह कभी फ़र्ज़ होता है, कभी वाजिब, कभी सुन्नत और कभी नाजाएज़, हर–हर हालत को खूब खोलकर बयान किया गया, फ़रमाया, इसलिये कि निकाह इच्छाओं की पूर्ति का साधन है, जिन्सी ख़्वाहिशें इन्सानी फ़ितरत के तक़ाज़े हैं, और इस्लाम की विशेषता ये है कि वो किसी भी फ़ितरी तक़ाज़ों पर पाबन्दी नहीं लगाता। इसीलिये न केवल ये कि निकाह की इजाज़त दी गयी बल्कि अगर बुराइयों में पड़ जाने का यक़ीन हो तो निकाह को फ़र्ज़ क़रार दिया गया। आंहज़रत स0अ0 ने नौजवानों को मुख़ातब करके फ़रमाया, "नौजवानों! तुममे से जिसके पास शादी का ख़र्च हो वो शादी ज़रूर करे, इससे निगाह व शर्मगाह की हिफ़ाज़त होती है।" (मुत्तफ़िक अलैह)

और आप स0अ0 ने फ़रमाया, "जब तुमको ऐसा शख़्स पैग़ाम दे जिसके दीन व अख़लाक़ से राज़ी हो तो शादी करा दो, अगर ये नहीं करोगे तो दुनिया में बहुत बड़ा फ़साद फैल जाएगा।" (तिरमिज़ी) और हज़रत आयशा रज़ि0 की रिवायत है कि बरकत में सबसे बढ़ा हुआ निकाह वो है जिसमें ख़र्च कम से कम हो। (बेहक़ी)

इतनी ज़्यादा अहमियत वाली चीज़ को आसान होना ही चाहिये, इसलिये कि अल्लाह की सुन्नत है कि जो चीज़ जितनी ज़्यादा ज़रूरत हो उसको अल्लाह उतना ही सहल और आसान बना देता है। जैसे हवा और पानी इन्सान के साथ सभी जानदारों के लिये बड़ी ज़रूरत की चीज़ें हैं। इसीलिये अल्लाह ने सबके लिये उनको पाना बिल्कुल सहल और आसान बना रखा है, इसी तरह निकाह बहुत ही ज़रूरत और

अहमियत की चीज़ थी, इसीलिये इसको बहुत ही आसान बना दिया गया था, और सादगी से करने की ताकीद की गयी थी, उस दौर में केवल दो चीज़ों की आवश्यकता होती थी। एक मेहर, दूसरे वलीमा, मेहर औरत का हक़ था, मर्द को मुहैया करना पड़ता था, उसमें भी ऐसा मेहर मुकर्रर करना मना था जिसको अदा करना मुश्किल हो जाए और वलीमें में इतनी सादगी थी कि अपने कुछ दोस्तों को गोश्त रोटी खिला दी। या केवल हाज़िर होने वालों को कोई मीठी चीज़ खिला दी, बस वलीमा हो गया, आंहज़रत स0अ0 ने कुछ अज़वाजे मुतहरात का वलीमा सिर्फ़ "हैस" से किया जो खजूर, और घी मिलाकर बनाया जाता है। कुछ अज़वाज मुतहरात का वलीमा दो मुद जौ से किया, दो मुद जौ की मात्रा दो किलो से भी कम होती है। आंहज़रत स0अ0 ने सबसे शानदार वलीमा हज़रत ज़ैनब रज़ि0 से निकाह के वक़्त किया था, इस दावत का बयान क़ुरआन मजीद में भी है। लेकिन शहंशाह दो आलम, सरवरे कायनात स0अ0 का ये वलीमा कैसा था हज़रत अनस रज़ि0 से सुनिये, फ़रमाते हैं: आंहज़रत स0अ0 ने जैसा (अज़ीमुश्शान वलीमा) हज़रत ज़ैनब रज़ि0 का किया, इस तरह किसी का नही किया, आप स0अ0 ने एक बकरी से वलीमा किया। (बुख़ारी मुस्लिम)

सहाबा किराम हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ की गिनती रईसों और मालदारों में की जाती है। उन्होने मदीना में रहते हुए शादी की, लेकिन आंहज़रत स0अ0 को पता न चल सका। आप स0अ0 ने उनके कपड़ों पर कुछ निशान देखकर पूछा कि ये क्या है?बताया कि उन्होने शादी कर ली है। आप स0अ0 ने फ़रमाया: "वलीमा करो, चाहे एक बकरी से ही क्यों न हो" (मुत्तफ़िक़ अलैह)

शादी और निकाह के सिलसिले में ये है कि आंहज़रत स0अ0 और सहाबा किराम रज़ि0 का नमूना ही अख़्तियार करने का उम्मत को हुक्म व हिदायत है। लेकिन हम खुद ग़ौर कर सकते हैं कि उस नमूने को हमने कहां तक अख़्तियार कर रखा है और उस पर हमारा कितना अमल है?अगर हम इसी सादगी पर रहते तो देशवासी हमको रश्क़ की निगाहों से देखते। हिन्दुस्तानी रस्मोरिवाज के डसे हुए इस्लाम के दामन में पनाह लेने के बारे में ग़ौर करते, लेकिन अफ़सोस हमने खुद देश की दूसरी क़ौमों की पैरवी में एक–एक रस्म अपनाने की कोशिश की। उन रस्मों का सिलसिला पैग़ाम और मंगनी से ही शुरू हो जाता है और शादी के काफ़ी दिनों के बाद तक रहता है। दिन तारीख़ रखने के नाम से मंगनी ही में इतनी धूम मचाई जाती है कि शरीअत इतना एहतिमाम अस्ल निकाह और वलीमे में भी करने की इजाज़त नहीं देती। फिर शादी में कौन सी ऐसी रस्मों रिवाज हमने अपने वतनी भाईयों से न ले रखी हो, सेहरा भी है, ख़ास क़िस्म के रंग के लिबास भी हैं, जहेज़ की भरमार भी है, दुल्हन के कई जोड़े कपड़े होने चाहिये, सिर्फ़ दूल्हा और दुल्हन ही नहीं हर पक्ष दूसरे पक्ष के सारे व्यक्तियों के लिये कपड़े ज़रूर तैयार कराये, यहां तक कि जिनका इन्तिक़ाल हो चुका है उनके नाम से भी कपड़े भेजना ज़रूरी है। करीबी रिश्तेदार भी आये तो घर के मालिक और मालकिन के लिये कपड़े लाना ज़रूरी है। लड़की की शादी है तो कोई तोहफ़ा न लाये तो नाक कट सकती है। बारात में लड़के वालों की ख़्वाहिश होती है कि इतनी सख़्यां लायी जाए कि इलाक़े भर में शोर हो जाए और कहा जाए कि इतनी बड़ी बारात पहली बार देखी। फिर कोशिश इसकी की जाती है कि खाने में भी इतना कुछ कर दिया जाए कि लोग कुछ दिन तक इसका चर्चा करते रहें। ग़रज़ ये कि रस्मों को इतना बढ़ा दिया गया है कि शादी का अस्ल मतलब ही उससे जाता रहा। बजाए खुशी के इसको सोचकर ही दिल कांप जाता है। लोग ब्याज पर क़र्ज़ लेते हैं। जिनके पास इतनी दौलत न हो वो हसरत की तस्वीर बन जाते हैं। न जाने कितनी बच्चियां शादी के इन्तिज़ार में बूढ़ी हो जाती हैं। ग़ौर किया जाए कि मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों की शादी में क्या फ़र्क़ बाक़ी रहा है?शायद सिर्फ़ इतना कि यहां मोलवी साहब अगर निकाह पढ़ाते हैं और वहां पन्डित फेरे लगवाता है। फिर ताज्जुब इस पर है कि पूरा समाज इन रस्मोरिवाज से परेशान है। इसके बावजूद समाज का दबाव इतना ज़्यादा है कि उनसे छुटकारा पाने के लिये पहल करने की हिम्मत कोई भी अपने अन्दर नहीं पाता। इस तरह की सूरते हाल में अगर उम्मीदें हैं तो सिर्फ़ इस्लाम के नौजवान से, वो अगर पुख़्ता इरादा कर लें तो ये रस्में मिट सकती हैं, और मुमकिन हद तक सादगी लायी जा सकती है, जैसे:

1– मंगनी का ग़ैरमामूली एहतिमाम ख़त्म कर दिया जाए, दिन, तारीख़ सादगी से रखना भी मुमकिन है।

2– बाजे–गाजे और खेल तमाशों की मुसलमानों के यहां कोई गुंजाइश नहीं। इसको हर हाल में ख़त्म कर दिया जाए।

3– बारात में सिर्फ़ उतने ही लोगों को ले जाने का मामूल बनाने की कोशिश की जाए जिनको ले जाना बहुत ज़रूरी हो, जितना मुमकिन हो सके गिनती कम कर दे। और बिलावजह गाड़ियों की संख्या बढ़ाने की कोशिश न की जाए।

4– जहेज़ अगर देना ही हो तो उसकी नुमाइश बन्द कर दी जाए, उस पर फ़ख़्र बन्द कर दिया जाए। शादी के दिन उसका लेन–देन करने के बजाए बाद में कर लिया जाए। अगर तुरन्त इस ओर कोई क़दम नहीं बढ़ाया गया तो वो दिन दूर नहीं जब हिन्दुस्तान ही के कई इलाक़ों में जहेज़ और नक़दी की मांगे भी शुरू हो जाएंगी।

5– इसमें कोई शक नहीं कि वलीमा करना सुन्नत है, लेकिन इसमें भी बहुत ज़्याद ख़र्च न किया जाए, सिर्फ़ इस हद तक हो जिसका ख़र्च आसानी से बर्दाश्त करने की ताक़त हो।

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो लोग अच्छे तरीक़े को राएज करते हैं उनको बाद में सभी अमल करने वालों का सवाब भी मिलता है। लिहाज़ा जो नौजवान शादी में आंहज़रत स0अ0 और सहाबा किराम रज़ि0 का नमूना अपनाने की कोशिश करेंगे और सादगी अपनांएगे इंशाअल्लाह बाद में सभी अमल करने वालों का सवाब उनको हासिल होगा।

तलाक़ की बुराइयां: निकाह ज़िन्दगी भर के लिये किया जाने वाला वादा है। लेकिन कभी कोई रिश्ता ऐसा भी हो जाता है कि जिसमें मिज़ाज का बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ होता है और ज़िन्दगी भर साथ निभाना मुमकिन नहीं होता। ऐसे समय शरीअत ने तलाक़ की इजाज़त दी है लेकिन हलाल चीज़ों में इसको सबसे ज़्यादा नापसन्दीदा चीज़ क़रार दिया गया। फिर जब ज़रूरत पड़ जाए तो तलाक़ का सबसे बेहतर तरीक़ा ये बताया गया कि औरत जब पाकी की हालत में हो, शौहर ने उस पाकी की हालत में उससे ख़ास संबंध न बनाए हों तो एक तलाक़ दे दे, फिर उससे दूर रहे यहां तक कि औरत की इद्दत ख़त्म हो जाए। दूसरा जाएज़ तरीक़ा ये बताया गया कि इसी तरह की पाकी की हालत में तलाक़ दी जाए फ़िर दूसरी पाकी आये तो दूसरी तलाक़ दी जाए, तीसरी पाकी आये तो तीसरी तलाक़ दी जाए।

अगर एक साथ तीन तलाक़ दी जाए, या माहवारी की हालत में तलाक़ दी जाए तो बताया गया कि तलाक़ हो जाएगी लेकिन बहुत गुनाह होगा। आज हमारे समाज में यही नाजाएज़ तरीक़े चलन में हैं। जब भी तलाक़ देंगे तीन से कम न देंगे। और कभी भी इसका पता नहीं लगाया जाता कि औरत पाकी की हालत में है या नहीं इसलिये तलाक़ देने के बाद पछताते फिरतें हैं। अगर जाएज़ तरीक़े से तलाक़ दी जाए तो बाद में बड़ी गुंजाइश रहती है, न तलाक़ देने वाले को दिक़्क़त होती है न मुस्लिम समाज की जग हंसाई होती है। अल्लाह हमें इस्लाह की तौफ़ीक़ दे।

शेष : सहाबियात रज़ि0 की दीनी ख़िदमतें

इतनी तफ़सील इसलिये दी जा रही है कि मुसलमान औरतें ख़ास तौर पर "पयाम–ए–अराफ़ात" की पढ़ने वाली बहनें और बच्चियां ख़ुशी महसूस करें कि उनकी बुज़ुर्ग और एहतराम के क़ाबिल औरतें जिनको सहाबियात का शर्फ़ हासिल था किस पाये की थी और उनके हालात कितने तफ़सील के साथ मिलते हैं। इसी कारण किताबों के नाम भी लिख दिये गये हैं जिनमें उनके हालात मिलते हैं। उर्दू ज़बान में भी सहाबियात के हालात पर बहुत सी किताबें लिखी गयी हैं जो बाज़ारों में मिलती हैं। उनमें से कुछ किताबें केवल उम्महातुल मोमीनीन के हालात पर आधारित है और कुछ केवल बिनातुन्नबी स0अ0 के तज़किरह पर हावी हैं। और कुछ अकाबिर व अन्सार सहाबियात के वाक़्यात को पेश करती हैं जिनका अध्ययन ज़रूरी है।

अब आख़िर में उन विशेष योग्यता वाली और अनुसरण योग्य कुछ सहाबियात के नाम पेश किये जाते हैं जिनके हालात तफ़सील से मिलती हैं। और जो बारगाहे नबवी स0अ0 में आली मरतबा थीं। इन मुबारक औरतों में पहला नाम उम्मेहातुल मोमीनीन रज़ि0 का था जिनकी सख़्या ग्यारह थीं और उम्मेहातुल मोमीनीन में हज़रत ख़दीजा रज़ि0, हज़रत आयशा रज़ि0, हज़रत हफ़्सा रज़ि0, हज़रत सौदह रज़ि0, हज़रत ज़ैनब रज़ि0 उम्मुल मसाकीन, हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0, हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ि0, हज़रत जुवेरिया रज़ि0, हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि0, हज़रत मैमूना रज़ि0, हज़रत सफ़िया थीं जिनके एहसानात से उम्मते मुस्लिमा उबर नहीं सकती।

इसके बाद बिनात तैय्यबात रज़ि0 थीं जिनमें हज़रत ज़ैनब रज़ि0, हज़रत रुक़ैया रज़ि0, हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि0, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 उम्मुल हसनैन सैय्यदतुल निसा अहलुल जन्ना हैं। ये चारों हुज़ूर अक़दस सरवरे कायनात स0अ0 की महबूब साहबज़ादियां थीं और आप स0अ0 की जगह गोशा थीं, ख़ुदा उन सब की क़ब्रों को नूर से भर दे।

आम सहाबियात में मख़सूस और क़ाबिले तक़लीद व क़ाबिले रश्क़ औरतों में हज़रत सफ़िया अम्मतुन्नबी थीं।

हज़रत सुमैया रज़ि0, उम्मे सलीम रज़ि0, उम्मे अम्मारा रज़ि0, उम्मे हानी रज़ि0, फ़ातिमा रज़ि0 बिन्त ख़िताब, असमा बिन्त अबी बकर रज़ि0, असमा बिन्त यज़ीद, उम्मे हकीम रज़ि0, ख़न्सा रज़ि0, उम्मे हराम रज़ि0, खौला बिन्त हकीम रज़ि0, शक़ा रज़ि0, असमा बिन्त उमैस रज़ि0 लिस्ट में सबसे ऊपर हैं। इनके अलावा एक बड़ी तअदाद सहाबियात की है जिनकी क़ुर्बानियों, कारनामों और इल्मी व अमली ख़िदमात न भूलने के लायक़ है। अल्लाह तआला सारी मुसलमान औरतों को इन सहाबी बीबियों की पैरवी करने की तौफ़ीक़ दे।

इस्लाम की पांच बुनियादें

जनाब हैदर अली नदवी

किसी भी इमारत की मज़बूती, तरक़्क़ी का दारोमदार उसकी बुनियाद पर होता है। अगर बुनियाद कमज़ोर है तो पूरी इमारत उसकी सजावट, उसके अन्दर रहने वाले सब ख़तरे में हैं। इसलिये अक़्लमन्दी की बात ये है कि पहले बुनियादों को मज़बूत किया जाए फिर आगे निर्माण करें।

इस्लाम एक अज़ीमुश्शान तामीर है जिसकी बुनियाद पांच चीज़ों पर है। मोहसिन–ए–आलम हज़रत मुहम्मद स0अ0 ने फ़रमाया है: (इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है)

1– दिल के यक़ीन के साथ इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। अर्थात पूरी कायनात, ज़र्रा–ज़र्रा अल्लाह की मिल्कियत है। वही इसका मालिक है। उसके सब मोहताज हैं वो किसी का मोहताज नहीं। इसलिये इबादत की सारी शक्लें उसी की होनी चाहिये। नफ़ा–नुक़सान, मौत–ज़िन्दगी, इज़्ज़त–ज़िल्लत, कामयाबी–नाकामी, बीमारी–शिफ़ा की उम्मीद उसी से रखनी चाहिये यही तौहीद का निचोड़ है।

इस्लाम की सबसे पहली दावत है। इन्सान से ख़ुदाए पाक की सबसे पहली मांग यही है। सारे अम्बिया, सारे सहाबा, सारे ताबईन, तब्अ, ताबईन, औलिया–ए–किराम की सबसे पहली दावत व तालीम यही रही है। इसी तरह मुहम्मद स0अ0 की रिसालत का इक़रार, उनके नक़्शे क़दम पर कामयाबी का यक़ीन करना और अमली तौर पर सीरत को ज़िन्दगी के हर हिस्से में अपनाना भी ज़रूरी है। नबी के रास्ते के अलावा सभी राहें नाकामी की तरफ़ ले जाने वाली यक़ीन करना। इस यक़ीन के बाद ही इस्लाम में दाख़िला मिल सकेगा, इस्लाम में दाख़िल होने के बाद आदमी इससे कितना फ़ाएदा उठाता है ये उसकी मेहनत पर है।

इस यक़ीन के ख़िलाफ़ जो भी यक़ीन दिल में बिठाया जाएगा वो ज़ाहिर बात है कि शिर्क की किसी न किसी शक्ल में ले जाएगा। शिर्क सबसे बड़ा ज़ुल्म सबसे बड़ा गुनाह है (और जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया और बिना तौबा किये हुए मर गया तो ऐसे आदमी पर अल्लाह ने जन्नत को हराम कर दिया और उसका ठिकाना आग है) एक और मौक़े पर साफ़ ऐलान कर दिया और बड़ी ताकीद के साथ कहा है: (यक़ीनन अल्लाह तआला इस बात को मआफ़ नहीं फ़रमाएगा कि उसके साथ शिर्क किया जाएगा) इसके अलावा जिसको चाहेगा माफ़ कर देगा। इसलिये मुसलमान उम्मत को इससे चौकन्ना रहने की बहुत ज़रूर है। क्योंकि शैतान इबादत नहीं छुड़ाता है इसके या उसकी तरफ़ इतनी मेहनत नहीं करता है। शैतान तो जड़ खोखला करता है। आज ऐशिया के मुस्लिम समाज में शिर्क तेज़ी से फैल रहा है और ताज़ा हो रहा है और वो भी इस्लामी शक्ल के लबादे में। औलिया किराम की इज़्ज़त व अज़मत के पैराए में। हालांकि औलियाए किराम की इज़्ज़त सर आंखों पर औलिया किराम की दुश्मनी अल्लाह से दुश्मनी लेकिन औलियाए किराम की अक़ीदत की जो शक्ले हैं मुसलमानों के सारे वर्ग इसकी ओर ध्यान अवश्य दें।

2– इस्लाम की दूसरी बुनियाद पांच वक़्त की नमाज़ है। जो हमें एक अनुशासित जीवन बिताने का ढ़न्ग सिखाती है। इस्लाम में नमाज़ का वही मक़ाम है जो हमारे जिस्म में सर का है। जिस तरह बिना आंख, कान या बिना हाथ पैर के इन्सान ज़िन्दा रह सकता है लेकिन अगर उसका सर तन से जुदा कर दिया जाए तो वो मुर्दा हो जाएगा। नमाज़े छोड़कर हमारे इस्लाम का हाल वही होगा। इसलिये वो लोग जो नमाज़ों से कोसों दूर रहकर बहुत से रस्मी काम या नफ़ली इस्लाम के काम करके अपने को दीनदार समझते हैं उन्हे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि इस तरह वो ख़ुद को धोखा दे रहे हैं और अल्लाह की गिरफ़्त से वो बच नहीं सकेंगे।

3– इस्लाम की तीसरी बुनियाद ज़कात है जिसका संबंध माल की एक विशेष मात्रा से है जो माली इबादत है।

4– चौथी बुनियाद रमज़ान के रोज़े रखना।

5– पांचवी बुनियाद हज करना।

अब अगर इन पांच बातों के हम पाबन्द हैं तौहीद, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात तो मानों हमने अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम की सिर्फ़ बुनियाद डाली है। आगे हमारी मआशत, मआशरत, सही होगी तो इस्लाम की दीवार छत तैयार होगी फिर इख़लास, इकराम, ज़िक्र, इख़्लास की सजावट से हम इसे जितना चाहें खूबसूरत बना लें।

लेकिन आज हमारे और पूरी उम्मते मुस्लिमा के हाल ये हैं कि हमारे रहबर ने जो हमारे दीन की पांच बुनियादें बतायी हैं वही कमज़ोर है तो फिर इस्लामी बिल्डिंग का अमन व सुकून जिसका वादा किया गया है कैसे मिलेगा?

जिस यक़ीन व तौहीद के बाद हमें इस्लाम व ईमान में दाख़िला मिलता है अभी उसी के पेंच ढ़ीले हैं। इसको सीखने और इसकी मेहनत की सख़्त ज़रूरत है।

आज उम्मत का बड़ा तबक़ा बुनियादी फ़राइज़ व तौहीद के अक़ीदे के बजाए मज़ारों पर फूल माला, चादर चढ़ाने, मीलाद, फ़ातिहा, तीजा–चालिसवां, उर्स, चादर–गागर, हाथ सीने पर बांधने या नाफ़ के नीचे बांधने, आमीन ज़ोर से या धीरे से कहने में फ़सा हुआ है और हर तबक़ा अपने मसलक, और आगे माफ़ी मांगते हुए कहा कि अपने खुद साख़्ता दीन से ऊपर उठ कर नहीं सोच पा रहा है जिसका लाज़िमी नतीजा है कि आज उम्मत का हर तबक़ा अवाम बुनियादी इस्लामी चीज़ों से महरूम हो चुकी है। चदां माहाना, सालाना या हफ़्तावारी बेकार की रस्मों को अदा कर लेने को इस्लाम समझ बैठी है।

जिसकी वजह से इस्लाम की हक़ीक़ी बरकतों से महरूम है। नाच गाना टीवी, रोज़ तिलावत, रमज़ान में, नमाज़ जुमे में, या रमज़ान में, खाने पीने, उठने बैठने, शादी ब्याह में इस्लाम की पाकीज़ा ज़िन्दगी से कोसों दूर हैं, कहां से अबाबील हमारी मदद के लिये आंएगीं, कौन फ़रिश्ते नुसरत के लिये आएंगे, ये काम तो अल्लाह रसूल की मुहब्बत, औलिया किराम, अहले बैत व सहाबा से मुहब्बत, और हमारे नेक आमाल से होंगे जिनको आज हम भूल चुके हैं।

ये उम्मत खुराफ़ात में खो गयी
हक़ीक़त रिवायत में खो गयी

अल्लाह अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये! आमीन

शेष : मुसलमान की शान

मुसलमान की शान तो ये है कि अगर वो किसी ऐसे काम मे लगा है, जिसके बारे मे वो ये समझता है कि उससे ज़्यादा बेहतर काम अपनाना उसके बस मे है तो वो इसी पर बस नही करता बल्कि बेहतर को अपनाने की कोशिश करता है।

ये सिर्फ़ इस्लाम की विशेषता है कि एक तरफ़ वो मक़सद की दावत देता है, और दूसरी तरफ़ सही मक़सद अता करता है, एक तरफ़ वक़्त को बर्बाद करना और बेकारी इस्लाम मे जुर्म है तो दूसरी तरफ़ वो हर काम को चाहे अपनी ज़रूरत हो या दूसरों की, एक खास रुख देता है और उसकी दिशा को सही करता है। ये दो चीज़ें ऐसी हैं कि अगर मुसलमान उनको ध्यान मे रखें तो दुनिया की क़ौमों के बीच वो एक इम्तियाज़ी शान के साथ ज़ाहिर होंगे।

इस्लाम की तालीम के बावजूद अफ़सोस की बात ये है कि सबसे ज़्यादा मुसलमान मुहल्लों मे बेकारी नज़र आती है, जिस मज़हब ने सबसे ज़्यादा उद्देश्यता की दावत दी है, उसी के मानने वाले सबसे ज़्यादा बिना किसी उद्देश्य के जीवन व्यतीत करते नज़र आ रहे हैं। इसकी वजह ये है कि जिस तह इस्लाम के दूसरे हुक्म काहिली और सुस्ती का शिकार हो रहे हैं, ये अहम हुक्म भी उसी बेतव्ज्जही की नज़र हो रहा है। ख़ास तौर पर नौजवानों मे जिनको अल्लाह तआला ने ज़्यादा अमल करने की ताक़त अता की है, ये बीमारी आम तौर पर उनमे ही नज़र आती है। उनकी सलाहियतें बेकार हो रहीं हैं। हदीस मे हर मुसलमान को ये हिदायत दी गई है कि, (अनुवादः इन्सान को फाएदा प्राप्त करने वाला होना चाहिए) जो चीज़ उसको दीन व दुनिया मे नफ़ा पहुंचाए, उसकी फ़िक्र होनी चाहिए, और ज़ाहिर है कि अस्ल नफ़ा आख़िरत का नफ़ा है, ये दुनिया आख़िरत ही के लिए है, दुनिया के नफ़े को भी आख़िरत के नफ़े के साथ जोड़ा जाए। बस उसमे ज़रा दिल की सुई को ठीक करने और सतुंलन की ज़रूरत है। वो क़ौमें जिनके पास न ये पैग़ाम है, न ईमान व यक़ीन की मिठास है वो दुनिया को मक़सद बनाकर कहां से कहां जा रही हैं। लेकिन हम सबकुछ रखनेके बावजूद ग़ाफ़िल हैं, काश कि खुद हमे अपनी ताक़त का एहसास हो जाता और हम दुनिया को वो दे सकते जिसकी दुनिया को सबसे ज़्यादा ज़रूरत है!!!

जहेज़ की तबाहकारी

जनाब शीराज़ुद्दीन साहब

इस्लाम केवल कुछ इबादतों का नाम नहीं, बल्कि वो ज़िन्दगी गुज़ारने का एक पूरा निज़ाम है, जो ज़िन्दगी के सभी हिस्सों की रहनुमाई करता है। जिसमें किसी तरह की कोई कमी व अधिकता नहीं है। इस्लाम अपने समाज में किसी दुखियारे को नहीं देखना चाहता जिसकी दर्द भरी आहों से पूरा समाज लरज़ उठे। इस्लाम पूरे इन्साफ़ और दरमियानी चाल का नाम है। इन्ही हुक्मों व मसलों में एक अहम विषय निकाह व जहेज़ का है।

जहेज़ की लानत समाज का वो कैंसर है जो धीरे–धीरे पूरे हिन्दुस्तानी समाज की जड़ों को प्रभावित करता चला जा रहा है। मेरे दोस्तों! (अच्छी बात कहना और बुरी बातों से रोकना) पर कारबन्द होना हर हर मुसलमान पर लाज़िम है। भलाई की तरफ़ हुक्म देने और बुराइयों से रोकने की इस्लाम में बहुत बड़ी अहमियत है। समाज में बुराइयां देखकर और ज़ुल्म व सितम, तबाह कारी, और इस्लाम के ख़िलाफ़ तर्ज़े अमल को बर्दाश्त कर लेना पूरे समाज पर अल्लाह तआला के क़हर व ग़ज़ब को दावत देना है।

जहेज़ की तबाहकारियां इतनी ज़्यादा हैं कि उनपर लिखने के लिये दफ़्तर के दफ़्तर नाक़ाफ़ी हैं। अब तो हालात ऐसे ख़ौफ़नाक़ रुख़ अपना चुके हैं कि जहेज़ की मांगों से तंग आकर ग़रीब मां–बाप की क़ाबिल से क़ाबिल बेटियां अपने भविष्य से मायूस होकर ज़हर खाकर खुदकुशी करने या गले में फांसी का फ़न्दा डालकर मर जाने या अपने आप को आग में जला डालने पर आमादा हो रही हैं। कुछ शहरों में तीन–चार बहनों की सामूहिक आत्महत्या करने के रोंगटे खड़े कर देने वाली ख़बरों ने देश के कुछ अमीर और दिलवाले लोगों को चौंका कर रख दिया।

राज्य सभा में दी गयी रिर्पोट के अनुसारः

1977, 1978, 1979ई0 में बीवियों को ज़िन्दा जलाने के 2879 वाक़्ये पेश आये। इनके अलावा 61 दुल्हनों ने खुदकुशी कर ली। 1985ई0 में 837, 1986ई0 में 1319, 1987ई0 में 1912, 1988ई0 में 2209, 1989ई0 में 4000, 1990ई0 में 5187, 1993ई0 में 1952, 1994ई0 4850 औरतों को जहेज़ की वजह से मौत के घाट उतार दिया गया।

1 अगस्त बीबीसी लन्दन की रिपोर्ट के अनुसार 1988ई0 से लेकर 1990ई0 तक 11000 से ज़्यादा मौतें हुईं।

1994ई0 में 18 मौतें जहेज़ के लिये प्रतिदिन हुईं।

क्राइम रिपोर्ट ब्यूरो के अनुसार 1997ई0 में पूरे देश में 6006 मौतें जहेज़ के लिये हुईं। सबसे ज़्यादा जहेज़ी मौत उत्तर प्रदेश में हुईं जहां 786 औरतों को जहेज़ के लिये मार दिया गया या उन्होने जहेज़ के झगड़ों से तंग आकर खुदकुशी कर ली। उत्तर प्रदेश के बाद बिहार में 861, मध्य प्रदेश में 550, आंध्र प्रदेश में 520, महाराष्ट्र में 420 और राजस्थान में 356 जहेज़ के कारण हुई हत्यांए रिकार्ड की गयीं। तमिलनाडु में 183 हत्याओं का अन्दाज़ा किया गया, कर्नाटक में 95, केरेला में 25, पान्डिचेरी में इस प्रकार की हत्याओं की संख्या केवल दो थी।

हालिया रिपोर्ट के अनुसारः सालाना 7000 हत्यांए दर्ज होती हैं, जबकि एनसीआरबी का कहना है कि ये रिपोर्ट आधी है यानि लगभग 14000 हत्यांए सालाना जहेज़ के कारण से हो रही हैं। जिस रफ़्तार से हमारा देश तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ रहा है उसी रफ़्तार से जहेज़ के कारण हत्या में सालाना 38ः की बढ़ोत्तरी हो रही है। बंगलौर के सिटी हास्पिटल में रोज़ाना 5 से 7 ऐसी औरतों को भर्ती कराया जाता है जो जहेज़ की वजह से जला दी जाती हैं।

जब हम पूरे देश पर एक नज़र डालते हैं तो एक ख़तरनाक रिपोर्ट हमारे सामने आती है। अमरीका की तरह भारत में भी मिनट और घन्टे के अनुपात से जुर्म हो रहे हैं। जैसे हर 15 मिनट पर एक बलात्कार और हर दस मिनट पर एक महिला से छेड़–छाड़ और हर 45 मिनट पर एक औरत जहेज़ की ख़ातिर मार दी जाती है। और जब मां–बाप की रंजीदा निगाहें अपने लख़्तेजिगर और रूह को सुकून देने वाली की मुर्दा लाशों पर पड़ती है तो कलेजा फट जाता है और बेअख़्तियार ज़बान से निकल पड़ता हैः

अब याद आया ऐ याराने जां इस नामुरादी में
कफ़न देना तुझे हम भूले थे सामान–ए–शादी में।

जहेज़ की वजह से लड़कियों की शादी वक़्त पर नहीं हो पाती है लिहाज़ा लड़कियां खुद ही फ़हश और अश्लीलता में लिप्त हो जाती हैं और ग़लत तरीक़ों से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने पर मजबूर हो जाती हैं। और कभी शरीफ़ घराने की लड़कियां भी किसी के साथ भाग जाती हैं और अपने घराने की इज्ज़त और वक़ार को ख़ाक़ में मिला देती हैं। कुछ लड़कियां जिस्म फ़रोशी का पेशा अपना लेती हैं और इस तरह से जिस्मफ़रोश औरतों की संख्या देश में लगभग 25 लाख और उनके बच्चों की संख्या लगभग 53 लाख हैं। बहुत सी लड़कियां अपनी शादी के लिये नौकरियां करती हैं जिसके नतीजे में उन्हे टैम्पों और बसों में धक्के खाने पड़तें हैं और आफ़िस में झिड़कियां सुननी पड़ती हैं वो घर की ज़ीनत बनने के बजाए आफ़िस की ज़ीनत बनती हैं और घर के बाहर क़दम रखने की वजह से छेड़ख़ानी, अग़वा, बलात्कार, और अश्लील हरकतों का शिकार हो रहीं हैं। अगर जहेज़ के ख़ात्मे की और शादी को आसान से आसान बनाने की कोशिशें न की गयीं तो जिस्म फ़रोशी के धंधे में लिप्त होने वाली लड़कियों की संख्या में बेहद बढ़ोत्तरी होगी। हालांकि हर साल 26 हज़ार लड़कियों का जिस्मफ़रोशी के धंधे में दाख़िल होना एक पाक समाज में सांस लेने वालों के लिये एक सवालिया निशान है, और हिन्दुस्तानी समाज के चेहरे पर एक बदनुमा धब्बा है।

इस जहेज़ की वजह से एक ख़तरनाक़ रूझान लोगों के दिलों में पैदा होता जा रहा है कि मशीन के ज़रिये गर्भ का पता लगाकर अगर लड़की हो तो गर्भपात करा दिया जाता है। इस ख़तरनाक़ ज़हनियत के नतीजे में मशीन की ग़लत मालूमात के कारण बहुत से लड़के भी नष्ट कर दिये जाते हैं।

जनवरी 1994ई0 से गर्भ के दौरान लिंग पता कराने के लिये अल्ट्रासोनोग्राफ़ी जैसी नयी तकनीक के प्रयोग पर पाबन्दी लगा दी गयी है इसका उल्लघंन करने वालों के लिये सज़ा की भी व्यवस्था की गयी है लेकिन क़ानून बनाने वाले खुद इस काम के तोड़ने वाले हो तो भला आम लोगों पर क्या असर पड़ेगा। हक़ीक़त ये है कि क़ानून बनाने के साथ–साथ कानून को सख़्ती से लागू करना भी ज़रूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार हिन्दुस्तान में हर साल एक करोड़ बारह लाख गर्भपात के वाक़्ये होते हैं जिसमें हर साल 20 हज़ार औरतें मौत का शिकार हो जाती हैं। इस रिपोर्ट में और अधिक कहा गया है कि एक हज़ार पैदा होने वाले बच्चों पर 462 गर्भपात होते हैं यानि हिन्दुस्तान में हर 2 पैदा होने वाले बच्चों पर एक गर्भ गिरा दिया जाता है। न्छव् की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में रोज़ाना 20 हज़ार गर्भपात होते हैं।

जहेज समाज के लिये एक जहरीला इन्जेकशन है जो हमारे समाज के बेशुमार लोगों को मौत की नींद सुला चुका है। आज हिन्दुस्तान के मुसलमान एक दोराहे पर खड़े हैं। एक सरासर ज़िन्दगी है तो दूसरी सरासर मौत। केवल एक व्यक्ति की नहीं बल्कि क़ौमों और धर्मों की मौत, मगर इन्सान को अख़्तियार है कि वो जिस व्यवस्था को चाहे अपने लिये पसन्द कर ले, अल्लामा इक़बाल ने कहा है:

ये बन्दगी खुदाई वो बन्दगी गदाई
या बन्दा–ए–खुदा बन या बन्दा–ए–ज़माना

ऐ मिल्लते इस्लामिया के ग़ैरतमन्द नौजवानों! और क़ौम व मिल्लत के दर्दमन्दों ये ग़फ़लत व लापरवाही कब तक। औरतों के साथ जुल्म व सितम की इन्तिहा हो चुकी है अब तक तलाक़ और जहेज़ की वहज से कितनी औरतें जलकर ख़ाक़ हो गयीं और न जाने कितनी जलने वाली हैं। आज हम जिस इन्सानी नस्ल में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं वो नफ़्स की ख़्वाहिश हिस्र व लालच और पैसा परस्ती के नतीजे में जंगल के खूंख़ार दरिन्दों की आदतों और ख़सलतों को अख़्तियार करके एक बेअक़्ल और निहायत बेरहम नस्ल बनती जा रही है और इन्साफ़ और इन्सानी शराफ़त का जनाज़ा घर–घर से निकलता जा रहा है।

हर दर्दमन्द दिल का रोना मुझे रुला दे
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हे जगा दे

ऐ आक़ाए मदनी और शाहे ज़मन पर जान न्योछावर करने वालों इस दौर के अज़ीम फ़ितना "जहेज़" से हिन्दुस्तानी समाज को बचाना उम्मते मुस्लिमा की ज़िम्मेदारी है। इतिहास गवाह है कि दुनिया में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न किये जाने कि ख़िलाफ़ सबसे पहले इस्लाम ने क्रान्ति लायी थी और इसको अज़मत व सरबुलन्दी से हमकिनार किया। इस्लाम वालों का मन्सब समाजी लूटमार और बुरे कामों को बढ़ावा देना नहीं है बल्कि समाज में जुल्म व सितम के ख़िलाफ़ जिहाद और बुराइयों का मुक़ाबला और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना है। अगर वो अपने इस फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल हो गये तो पूरी ज़मीन फ़साद से भर जाएगी और एक ज़बरदस्त तबाही आयेगी जिसकी लपेट में हर छोटा–बड़ा आ जाएगा और कोई भी बच न सकेगा।

अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवाद: तो तुम से पहले जो उम्मतें हुईं उनमें ऐसे लोग क्यों नही हुए जो लोगों को ज़मीन में फ़साद करने से रोकते सिवाय कुछ आदमियों के जिनको हमने अज़ाब से बचा लिया और जो गुनाहों के आदी हो गये, और तेरा रब ऐसा नहीं है जो बिलावजह आबादियों को तहस–नहस कर दे, जबकि वहां के लोग इस्लाह पसन्द हों)

आपके दीनी सवालात
और
उनके जवाबात

कुरआन को बिना वज़ू छूना

प्रश्नः क्या कुरआन को बिना वज़ू के छुआ जा सकता है, और क्या इसकी तफ़सीर पढ़ी जा सकती है?

(ज़ीशान अहमद, नई दिल्ली)

उत्तरः कुरआन को बिना वज़ू के छूना जाएज़ नहीं है। रहा मसला तफ़सीर का तो अगर ऐसी तफ़सीर की किताब है तो जिसमें तफ़सीर का हिस्सा ज़्यादा है और कुरआन की आयतें कम हैं तो छूना जाएज़ है, लेकिन अगर कुरआन की आयतों का हिस्सा ज़्यादा है और तफ़सीर का हिस्सा कम है तो छूना जाएज़ नहीं है।

सर ढ़क कर बैतुलख़ला जाना

प्रश्नः क्या बैतुलख़ला जाते समय सर पर टोपी पहनना सुन्नत है? (ज़ीशान अहमद, नई दिल्ली)

उत्तरः सर ढ़क कर इस्तिन्जा और बैतुलख़ला जाने का सुबूत बाक़ाएदा हदीस से है और इस पर हज़रात सहाबा किराम रज़ि0 का पाबन्दी से अमल था।

"अल्लाह के रसूल स0अ0 जब हाजत पूरी करने के लिये जाते तो सर ढ़क कर जाते"

(कन्ज़ल आमाल 124:5, अलाअल सुनन भाग 1–323)

"एक दिन हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने ख़ुत्बे के दरमियान फ़रमाया कि जबसे मैंने रसूलुल्लाह स0अ0 से बैत की है उस वक़्त से मैं सर ढ़क कर हाजत पूरी करने के लिये जाता हूं" (कन्ज़ल आमाल 124:5, अलाअल सुनन भाग 1–323) इस तरह इस्तिन्जा के वक़्त सर ढ़कने के कई सुबूत हैं इसीलिये इसे आदाबे ख़ला में शुमार किया जाता है।

तस्वीर का इस्तेमाल

प्रश्नः क्या उलमाए किराम में से किसी की तस्वीर आफ़िस की दीवार पर लगा सकते हैं या नहीं?

(ज़फ़र अली, लखनऊ)

उत्तरः ऐसा करना नाजाएज़ है।

झुक कर सलाम करना

प्रश्नः क्या ईद की नमाज़ों के बाद झुक कर सलाम करना नाजाएज़ है? (मुहम्मद जुनैद अहमद, हैदराबाद)

उत्तरः झुक कर सलाम करना मकरूह है।

सालगिरह मनाने का हुक्म

प्रश्नः क्या इस्लाम में सालगिरह मनाना मना है? सालगिरह की मुबारक बाद देना मना है?या सालगिरह की दावत अपने घर वालों के साथ मनाना मना है?(ज़ारा, रायबरेली)

उत्तरः सालगिरह ग़ैरों का तरीक़ा है। इसको मनाना, इसकी मुबारक बाद देना, और इसकी दावत खाना–खिलाना सब मना है।

दुआए कुनूत का हुक्म

प्रश्नः अगर दुआए कुनूत याद न हो तो वित्र की नमाज़ में उसकी जगह कुछ और पढ़ा जा सकता है?सुना है इसकी जगह तीन बार सूरह इख़लास पढ़ सकते हैं?(अली फ़तेहपूर)

उत्तरः अगर किसी को दुआए कुनूत याद न हो तो उसकी जगह ये दुआ पढ़ सकता है:

"ربنا اتنا في الدنيا حسنة و في الآخرة حسنة و قينا عذاب النار"

तीन बार पढ़े या फिर "اللّٰهم اغفرلي" दुआए कुनूत की जगह सूरह इख़लास पढ़ना कहीं से भी साबित नहीं है।

कारोबार के दौरान नमाज़ की अदायगी

प्रश्नः मुझे अपने कारोबार के सिलसिले में घर–घर जाना पड़ता है, इस दौरान अस्र और मग़रिब की नमाज़ों का वक़्त हो जाता है, आस–पास कोई मस्जिद नहीं होती, ऐसी सूरत में मैं क्या करूं?क्या मैं घर पहुंच कर नमाज़ अदा कर सकता हूं?

(ज़ाएद, आस्ट्रेलिया)

उत्तरः नमाज़ उनके वक़्त के अन्दर ही पढ़ना शुरू से ही मतलूब व महमूद है। अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवादः नमाज़ मोमीनीन पर वक़्त–वक़्त से फ़र्ज़ है) (सूरह अन्निसाः 103) इसलिये मस्जिद का होना ज़रूरी नहीं है, अगर मस्जिद न हो और नमाज़ पढ़ने के लिये जगह मिल जाए तो उसको अदा कर लेना चाहिये, और बिना किसी शरई वजह के नमाज़ का कज़ा करना ठीक नहीं।

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मानवाधिकार का इस्लामिक दृष्टिकोण

मानवाधिकार का मसला आज एक अन्तर्राष्ट्रीय मसला बना हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ये मसला उठाया जाता है और पूरे ज़ोर व शोर के साथ कांफ्रेंस की जाती है। लगातार इस काम को जारी रखने के लिये राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं बन गयी हैं। और जब कभी छोटे देश ख़ासकर इस्लामी देशों में कोई ऐसा वाक़्या हो जाता है जो मानवाधिकार का हनन होता हो तो पश्चिमी मीडिया और मानवाधिकार की अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं इस तरह शोर मचाती हैं जैसे यूरोप व अमरीका ही मानवाधिकार के तन्हा रक्षक हों और मानो कि इस्लाम मानवाधिकार के हनन का ज़िम्मेदार हो। हालांकि इस्लाम ही मानवाधिकार का पहला ध्वजवाहक है। यूरोप में मानवाधिकार शब्द को चलन में तीन साढ़े तीन सौ साल से ज़्यादा नहीं हुआ, और अगर इतिहास का निरीक्षण किया जाए तो मानवाधिकार की गूंज पहले और दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सुनाई देगी। जिसमें मानवता का जिस प्रकार से हनन हुआ था शायद ही इससे पहले इतिहास में ऐसा उदाहरण मिलता हो। इन जंगों ने नई दुनिया अमरीका से जापान तक की ज़मीन को आग में झुलसा दिया था। और ये आग उस समय तक ठन्डी न हो सकी जब तक कि उसने सारी मानवता को अपनी चपेट में नहीं ले लिया। आख़िरकार सयुंक्त राष्ट्र संघ ने 1948ई0 को मानवाधिकार का बिल पास किया जो कि इन्सानी दिमाग़ की कोशिशों का फल है और अत्यधिक कमज़ोर है।

मानवाधिकार का विचार

मानवीय या आधारभूत अधिकारों से मुराद वो अधिकार हैं जिन्हे रिवायती तौर पर "मौलिक अधिकार" कहा जाता है और उनकी परिभाषा यूं हो सकती है कि वो व्यवहारिक अधिकार जो हर व्यक्ति को हर जगह और हर समय इस आधार पर प्राप्त हों कि वो दूसरे सभी प्राणियों से वो इस प्रकार से श्रेष्ठ है कि वो अख़लाक़ वाला है। और इन्साफ़ को बुरी तरह रौंदे बग़ैर कोई भी इन्सान उन अधिकारों से वंचित नहीं किया जा सकता। और बक़ौल जस्टिस जेक्सन के कि "किसी व्यक्ति की ज़िन्दगी, आज़ादी, मिलिक्यत, लिखने की आज़ादी, इबादत की आज़ादी, और इसी प्रकार दूसरे बनियाद अधिकार किसी रायशुमारी के लिये पेश नहीं किये जा सकते हैं। इनका आधार चुनाव के परिणाम पर हरगिज़ नहीं"

यूरोप में ये विचार पुराने ज़मानें में समाजी व्यवस्था के ख़िलाफ़ और फ़िर सत्तरहवी और अठ्ठारवीं सदी नई रियासत की हुकूमत और फिर दो विश्वयुद्ध के बाद प्रतिक्रिया के रूप में आया। जबकि इस्लाम ने जो अधिकारों का विचार प्रस्तुत किया है वो किसी प्रतिक्रिया का नतीजा नहीं था बल्कि इन्सान क फ़ितरती तक़ाज़ों और आला इन्सानी कद्रों की पूर्ति थी।

इस प्रकार ने पश्चिम ने जो मानवाधिकार का ख़ाक़ा पेश किया उसकी हैसियत अपने इतिहास के पसेमन्ज़र के आधार पर आधारित है, जबकि इस्लाम का नज़रिया नक़्शे हुकूक़ के हैसियत अक़दामी है।

इस्लाम मानवाधिकार का उद्गम है

आज से चौदह सौ साल पहले सैय्यदना हज़रत मुहम्मद स0अ0 ने इन्सानों को ख़ुशी का न्योता दिया और मानवाधिकार को सबसे पहले इन्सानों के सामने पेश किया और उनके अधिकारों को रूहानी व अख़लाक़ी क़द्रों और क़ानूनी साधनों से फैलाया जिसको लोगों ने स्वीकार भी किया। और उन्हें सदा जलती रहने वाली हिदायत की मशाल भी बख़्शी और मानवाधिकार को समझने और बरतने के लिये क़ुरआन हदीस जैसा क़ीमती सरमाया छोड़ा।

अल्लाह तआला ने जब आप स0अ0 के ज़रिये इस तरह इन्सानी स्तर स्थापित कराया कि पूरी मानवता की अस्ल एक है और दुनिया के सारे इन्सान एक–दूसरे से इस तरह जुडे हैं कि केवल देश या धर्म की दूरी के उनमें कोई फ़र्क़ नही।

क़ुरआन कहता है:

(अनुवादः लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया फिर तुम्हारी बिरादरियां बनायी ताकि तुम एक दूसरे को पहचानों अस्ल में अल्लाह के नज़दीक़ सबसे अच्छा वो है जो तुममे सबसे परहेज़गार है)

इसी तरह आम इन्सानी हक़ करामत को इस तरह बयान फ़रमायाः

(अनुवादः हमने आदम की औलादों को इज़्ज़त व शर्फ़ बख़्शा)

हुज़ूर स0अ0 ने मानवाधिकार को अपने अमल से जारी करके बताया और अपनी बातों में बार बार इस ओर ध्यान दिलाया।

आप स0अ0 ने इन्सानी बराबरी की मिसाल इस तरह बयान फ़रमायीः

(इन्सान इस तरह बराबर हैं जैसे कंघी के दाने)

इस्लाम से पहले बड़ाई और शराफ़त की बहुत ही गिरे हुए मेयार क़ायम थे। ख़ानदान और माल के पैमाने पर इन्सान को तौला जाता था। इस्लाम ने अख़लाक़, फ़ज़ल व शराफ़त और करामत का मेयार, अर्थ व स्तर ही बदल दिया और एक ऐसा स्तर पेश किया जो पूरी मानवता के सांचे के अनुसार था। यहूदियों व नसरानियों के नज़दीक फ़ज़ल का मेयार ये थाः

(हम तो अल्लाह के बेटे और चहेते हैं)

और इस बेबुनियाद नज़रिये पर जो इमारत खड़ी थी उसका लाज़मी नतीजा था कि :

(कोई जन्नत में दाख़िल न होगा सिवाये यहूद व नसारा के)

इसी तरह रोम के बादशाह ये समझते थे कि फ़ितरी तौर पर वो दुनिया के बादशाह हैं और दुनिया में बसने वाले कमतर हैं यानि वहशी व जंगली और उनके नौकर। इसी तरह अरब ये सोचते थे कि वही सभ्यता व भाषा के इमाम हैं और उनके अलावा सब गूंगे और ग़ैर अरब वाले हैं।

हिन्दुस्तान में ब्रहम्णों का विश्वास था कि अल्लाह ने उन सबको आला व अशरफ़ हिस्से से पैदा किया है और अछूतों को सबसे घटिया हिस्से से। सर और पैर बराबर नहीं हो सकते। इसके नतीजे में समाज में एक कशमकश पैदा हो गयी थी। अछूतों की ज़िन्दगी अजीरन थी। सबकी हैसियत जानवरों से भी कम थी। आज जबकि पूरा समाज तेज़ी से उन्नति की तरफ़ बढ़ रहा है, नये नये मूल्य जन्म ले रहे हैं, लोगों की सोच और समाज का स्तर बदल रहा है, अछूतों में इल्मी तरक़्क़ियां होने के बावजूद वो भारत के समाज में कमतर ही हैं। और अपने तमाम अच्छाइयों के बावजूद वो आला ज़ात की बिरादरियों के बराबर नहीं हो सकते।

ग़रज़ ये कि पूरी दुनिया में पक्षपात, जिहालत, घमन्ड का तिलिस्म छाया हुआ था। इस्लाम से पहले हर जगह नसब व हसब और जिन्स की परसतिश हो रही थी। और हर जगह माल व ज़र और ताक़त की बड़ाई नज़र आती थी। ऐसे हालात में इस्लाम इन्सानियत की क़िस्मत का सूरज बन का प्रकाशित हुआ, उसने इन्सानियत का करामत बख़्शी, इन्सानों को भाई बनाया, जिन्स व रंग के इख़्तिलाफ़ को ख़त्म किया और साथ ही पूरे अक़ीदे की आज़ादी का ऐलान पूरे दिल व हौसले के साथ यूं कर दियाः

(अनुवादः दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं है)

दूसरी जगह यूं फ़रमायाः

(अनुवादः और अगर अल्लाह चाहे तो पूरी ज़मीन पर जितने भी लोग हैं सब ईमान ले आयें, तो क्या आप उन लोगो पर जबरदस्ती कर सकते हैं, जिसमें ईमान ले ही आयें)

इस दर्जे से इस्लाम ने किताब वालों के अक़ीदों का एहतराम किया। और उनके साथ इन्साफ़, नेकी और भलाई का हुक्म दिया और इस्लामी हुकूमत में उनको सभी सुहूलियतें मुहिय्या कीं, उसमें आज़ादी के साथ अपने दीनी काम को करने की ज़मानत मौजूद है।

इस्लाम ने जो अधिकार इन्सानी नस्ल को दिये हैं वो किसी ख़ास कौम व मिल्लत व वर्ग के लिये नहीं हैं। बल्कि उसके दिये गये अधिकार सारे इन्सानों के लिये है और बिना किसी अन्तर के एक तौर पर। क्योंकि इस्लाम आलमी भी है और हमागीर भी। क़यामत तक आने वाली तमाम नस्लों के लिये इसमें हिदायतें हैं और इस्लाम धर्म हमागीर, हमावक़्त जहत है इसी तरह इसके पैग़म्बर भी पूरी इन्सानियत के लिये एक थे और उनकी ज़िन्दगी ऐसी थी कि वो पूरी दुनिया के लिये हिदायत की रोशनी हैं।

अल्लाह तआला का इरशाद हैः

(अनुवादः हमने तुमको सभी इन्सानों के लिये मिसाल बनाकर भेजा है)

दूसरी जगह इरशाद हैः

(अनुवादः हमने आप स0अ0 को दोनों जहां के लिये रहमत बनाकर भेजा है)

इस्लाम ने इन्सानों को जो मानवाधिकार दिये हैं वो उनकी फ़ितरत और इन्सानी जज़्बात यूरोप व अमरीका के बुद्धिमानों, दुनिया के अमन के ठेकेदार ज़ाहिरी तौर पर अपनी हज़ार कोशिशों के बावजूद दुनिया के एक छोटे से हिस्से में भी अमन क़ायम न कर सके बल्कि जिस देश में भी अमन क़ायम करने की कोशिशें की गयीं वो देश पहले से ज़्यादा बदहाल हो गये। ईराक़ और अफ़ग़ानिस्तान की मिसालें बिल्कुल ताज़ा हैं। जहां पर मानवाधिकार की बहाली के नाम पर पूरे देश को रौंदा गया। मानो ज़हर का ईलाज ज़हर से करने की कोशिश की गयी और अल्लाह तआला के बताए हुए उसूलों और क़ायदों और मानवाधिकारों के ख़िलाफ़ अमल किया गया। जिसके नतीजे में हर क़दम पर ठोकरें ख़ानी पड़ीं और इन्सानियत का सुकून ग़ारत हो गया। इसके मुक़ाबले इस्लाम ने इन्सानों को जो हुक़ूक़ दिये हैं वो पूरी इन्सानियत की कामयाबी के ज़मानतदार हैं और इतिहास ने बार बार इसको परखा है। आज भी इस्लाम का पैग़ाम आम है और सभी इन्सानों के लिये ज़बान व मकान की हद व क़ैद से आज़ाद, व कालों, गोरों, अरब, ग़ैरअरब सबके लिये एक रहमत व शफ़क़त का पैग़ाम है। इस हिदायत नामे से सारी इन्सानियत के लिये हिदायत के नूर की किरनें हमेशा फूटती रहेंगी और ये ऐसा साफ़ चश्मा है जिससे मानवता हमेशा अपनी बीमारियों का इलाज भी पाती रहेगी और आबेहयात भी।

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी

ग़ैर इस्लामी अख़लाक

कुरआन व सुन्नत की रोशनी में

फ़र्ख़ व गुरूर

इन्सान में जब कोई कमाल या विशेषता पायी जाती है तो कुदरती तौर पर उसके दिल में इसका ख़्याल पैदा हो जाता है लेकिन जब ये इस क़दर तरक़्क़ी कर जाता है कि दूसरों को जिनमें वो विशेषता नहीं है या कम है, हक़ीर समझने लगता है तो इसको घमन्ड कहते हैं।

अक्सर यही लोग हक़ की राह में रूकावट और समाज की गिरावट का कारण बनते हैं। और अपने इस घमन्ड व नफ़्सानियत में गिरफ़्तार होकर खुदा की राह से दूर जा ठहरते हैं।

कुरआन मजीद के शब्दों में:

(अनुवाद: और क़यामत के दिन सब लोग खुदा के सामने निकल खड़े होंगे तो जो लोग दुनिया में कमज़ोर थे उस समय उन लोगों से जो बड़ी इज़्ज़त रखते थे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे क़दम से क़दम मिलाकर चलने वाले थे तो क्या तुम आज खुदा के अज़ाब में से हम पर से कुछ थोड़ा सा अज़ाब हटा सकते हो)

(अनुवाद: अल्लाह गुरूर करने वालों को पसन्द नहीं करता)

और लोगों से बेरुख़ी न करो और ज़मीन में इतरा कर न चलो बेशक अल्लाह उसको प्यार नहीं करता जिसको घमन्ड हो जो बहुत फ़र्ख़ करने वाला हो।

इस्लाम ने हस्ब व नस्ब, रंग व नस्ल, हुस्न व जमाल, दौलत व कूवत और मदद करने वालों की कसरत पर फ़र्ख़ व गुरूर करने के सिलसिले में क़त्ई तौर पर नापसन्दगी का इज़हार किया है। जबकि फ़र्ख़ व गुरूर करने वाले लोग उन्ही चीज़ों पर फ़र्ख़ करते हैं लेकिन इस्लाम ने इसका दूसरा मेयार रखा है जिसको इस आयते करीमा में साफ़ किया गया है:

(अनुवाद: लोगों हम ही ने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी ज़ातें और बिरादरियां ठहराया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको, अल्लाह के नज़दीक तुममे से बड़ा वो है जो परहेज़गार है)

जहां तक ज़ेब व ज़ीनत व ज़िस्म की ज़ाहिरी आराइश और पाकीज़गी का संबंध है हुस्न व जमाल और सफ़ाई व सुथराई को एक क़ाबिले कद चीज़ करार दिया चुनान्चे एक खूबसूरत शख़्स ने जब आप स०अ० से पूछा कि मेरा कपड़ा और मेरा जूता उम्दा हो तो फ़रमाया खुदा हुस्न को ज़्यादा पसंद करता है।

अल्बत्ता जिन सूरतों में हुस्न व जमाल गुरूर व घमन्ड के इज़हार का ज़रिया बन जाता है इस्लाम ने उनकी मनाही की है।

इस तरह इस्लाम ने इनत माम सूरतों पर पाबन्दी लगा दी है जिससे दूसरों का दिल दुखने या उनको शर्मिन्दगी उठानी पड़े। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

(अनुवाद: मुसलमानों अपनी ख़ैरात को एहसान जताकर और सायल को तकलीफ़ देकर उस शख़्स की तरह अकारत मत करो जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करता है और अल्लाह और आख़िरत के दिन पर यक़ीन नहीं रखता है।)

सिर्फ़ इज़्ज़त या नामवरी के लिये ख़र्च करना, हर समय अपनी तारीफ़ करना और अपने कामों को फ़र्ख़ या नुमायां तौर पर बयान करना ये वो बीमारियां है जो आपस में नापसन्दीदगी की फ़िज़ा कायम करते हैं और ऐब निकालने का दरवाज़ा खोल देते हैं। इस्लाम ने ऐसे सभी चोर दरवाज़े बन्द कर दिये हैं। और मुसलमानों को समय समय पर इसकी तालीम दी है कि जो काम भी करें वो सभी ज़ाति ख़्वाहिशों और ज़ाहिरी गरज़ों से ऊपर होकर करें। और खुदा के तारीफ़ के मुस्तहिक़ बनें।

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
Arafat Kiran
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME 4

MAY 2012

ISSUE 05

Our Daily Mobile SMS sevice

اپنے موبائل پر روزانہ اسلامی MSG حاصل کریں،
ٹائپ کریں Arafat اور بھیج دیں 56767 پر۔
نوٹ: یہ سروس بالکل مفت ہے اور DND نمبروں پر بھی جاری ہے۔

To get daily messages on your mobile, Just
Type: Arafat & Send it to : 56767

Please note:

This service completely free of cost & will also work on DND activated Mobile numbers.

ہماری ویب سائٹ

www.abulhasanalinadwi.org

دار عرفات مرکز الإمام أبي الحسن الندوي
کی سرگرمیوں اور اس کی پیش رفت سے واقفیت،
مفکر اسلام حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندویؒ کی تقاریر، تصنیفات، افکار،
اور دیگر پہلوؤں سے متعلق معلومات

☆ درسِ قرآن ☆ درسِ حدیث ☆ رمضان المبارک کے خطاب
☆ توسیعی مقالات وخطبات ☆ آپ کے دینی مسائل اور ان کا حل

دار عرفات مرکز الإمام أبي الحسن الندوي
تکیہ کلاں رائے بریلی (یوپی) انڈیا

Mob.:9918818558

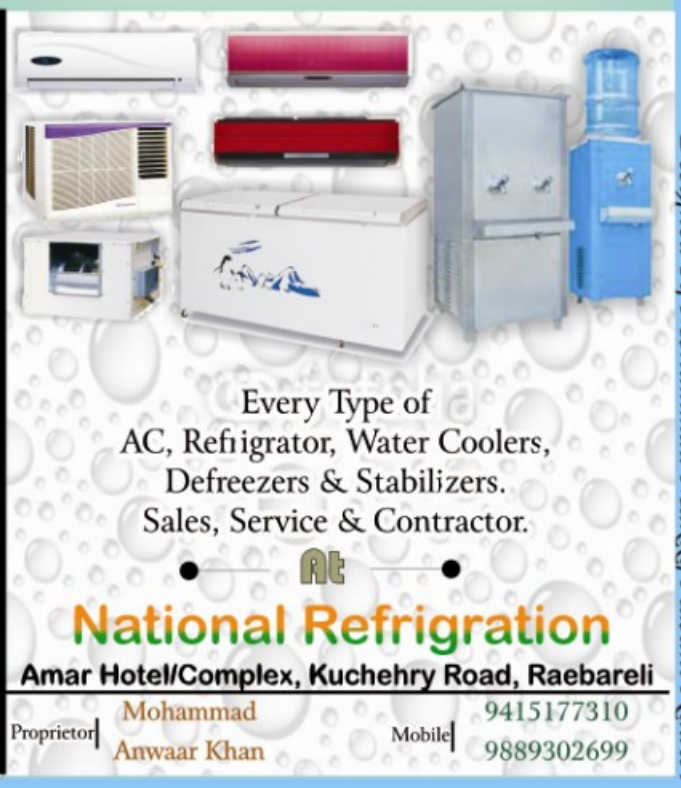

Designed by Mohammad Makky Hasani Nadwi

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche, Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.